वर्ष 1 | अंक 2 | अप्रैल-जून, 2011

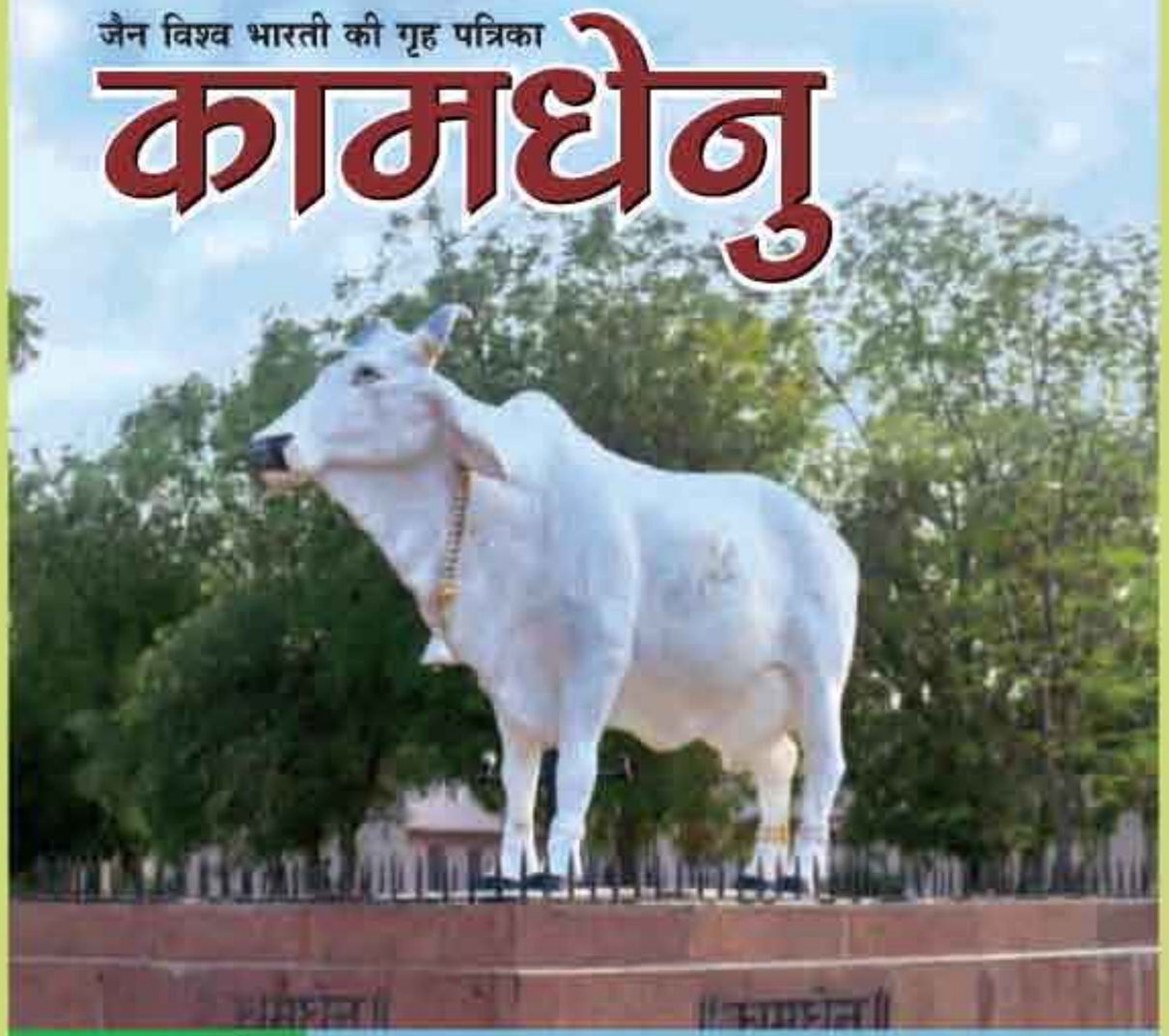

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

कामधेनु

आवरण आलेख

पर्यावरण और प्रदूषण | 23

अन्तर्पृष्ठीय

पंचाचार आराधना की ओर बढ़ते कदम | 07
जैन विश्व भारती का 42वां स्थापना दिवस | 16
विदेशी केन्द्रों की गति-प्रगति | 21
जैन विश्व भारती : एक तपोभूमि | 30

JAIN VISHVA BHARATI

जैन विश्व भारती समाज के लिए कामधेनु सिद्ध होगी, ऐसा विचार बार-बार मन में आता है किन्तु मैं इसमें लिप्त नहीं होना चाहता। माना कि यह मेरे मन की उपज है, मेरे विचारों पर आधारित है और इसके साथ मेरा आध्यात्मिक अनुबंध है, फिर भी मैं इससे अलिप्त रहना चाहता हूं। कुछ कार्यकर्ता जुटे हैं, कुछ और जुट जाएंगे। इसकी गतिविधियां निश्चित रूप से आगे बढ़ेंगी, ऐसा विश्वास है। इसके साथ ही मेरा यह अभिमत भी है कि मैं अलिप्त रहकर इसके माध्यम से अधिक सेवा कर सकूंगा।

जैन विश्व भारती कामधेनु है, पर इसका भी संरक्षण आवश्यक है। यह सुरक्षित रहेगी तो सबको सुरक्षित रखेगी। मुझे तो इसका ध्यान रखना ही होगा, पर उपयोगिता को देखते हुए सबको ध्यान रखना है।

आचार्य तुलसी

(संदर्भ : विज्ञप्ति, वर्ष - 10, अंक - 14, 18-24 जुलाई, 2004)

जैन विश्व भारती कोई संगठनमूलक संस्थान नहीं है। शिक्षा, शोध, सेवा, साधना की गतिविधियां यहां चलती हैं। तेरापंथ के आचार्य इसके अनुशास्ता हैं। साधु-साध्वियां इस संस्थान की आंतरिक गतिविधियों के संचालन में सहायक बनते हैं। व्यवस्था और बाह्य गतिविधियों का संचालन समाज द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों और अधिकारियों के द्वारा होता है। वर्तमान में जो टीम यहां काम कर रही है, वह इसके चहुंमुखी विकास के लिए पूरी तरह से सचेष्ट है। गुरुदेव तुलसी जैन विश्व भारती को 'कामधेनु' कहा करते थे। उसी के अनुरूप जैन विश्व भारती अपने नाम की सार्थकता सिद्ध कर रही है।

आचार्य महाप्रज्ञ

(संदर्भ : विज्ञप्ति, वर्ष - 15, अंक - 13, 5-11 जुलाई, 2009)

आशीर्वचन

अर्हम्

जैन विश्व भारती का आध्यात्मिक वातावरण देखकर महाविदेह की स्मृति हो रही है। मैं इसे हिन्दुस्तान का महाविदेह कहता हूं। इस संस्थान से जैन जगत को बहुत संभावनाएं हैं। यह जैन विद्या का तत्वज्ञान देने वाली कामधेनु बने।

आचार्य महाश्रमण

(संदर्भ : विज्ञप्ति, वर्ष - 2, अंक -- 24, 3 अक्टूबर, 1996)

संजीवन बोल

जैन विश्व भारती तेरापंथ समाज की अखिल भारतीय स्तर की बहुउद्देशीय संस्था है। शिक्षा, शोध, सेवा, संस्कृति, संस्कार, साहित्य आदि इस संस्था की अनेक योजनाएं हैं। कुछ योजनाओं की क्रियान्विति हो चुकी है। जितनी क्रियान्विति हुई है, उतनी ही नई संभावनाएं फिर उसके साथ जुड़ती जा रही हैं। उन संभावनाओं को आकार देने के लिए समाज की छोटी-बड़ी (स्त्री-पुरुष) हर इकाई का दायित्व है कि वह अपनी संस्था को अपना, अपने समाज और देश का भविष्य मानकर उसके विकास में अपना योगदान दें।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

कामधेनु

वर्ष 1 | अंक 2 | अप्रैल-जून, 2011

परामर्श
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रकाशक
नितेन्द्र नाहटा, मंत्री
जैन विश्व भारती

संपादक
डॉ. वन्दना कुण्डलिया

संपादन-सहयोग
राजेन्द्र खटेड़

जैन विश्व भारती
पोस्ट बॉक्स नं. 8,
पोस्ट - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर, राजस्थान (भारत)
दूरभाष : +91-1581-222025/080
फैक्स : +91-1581-223280
ई-मेल : secretariatldn@jvbharati.org

मुद्रक
अमृताक्षर अनन्त
158, लेनिन सरणी
कोलकाता - 700 013

अनुक्रम

आशीर्वचन	आचार्य महाश्रमण	1
संजीवन बोल	साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा	2
उपोद्घात	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	4
अध्यक्षीय	सुरेन्द्र चोरड़िया	5
संपादकीय	डॉ. वन्दना कुण्डलिया	6
आचार्य महाश्रमण		
अमृत महोत्सव	पंचाचार आराधना की ओर बढ़ते कदम	7
दस्तावेज	अतीत के वातायन से	8
	जैन विश्व भारती परिकल्पना का सत्य	10
आधार-स्तंभ	महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर	11
परंपरा के प्रतिमान	जैन विश्व भारती : 'अतिथिदेवो भव' की संवाहिका	12
प्रगति पदचिह्न		
• आचार्य तुलसी की पुण्यतिथि का आयोजन		14
• आचार्य महाप्रज्ञ के 92वें जन्मदिवस का 'प्रज्ञा दिवस' के रूप में आयोजन		14
• विश्व पर्यावरण दिवस		15
• जैन विश्व भारती का 42वां स्थापना दिवस एवं महावीर जयन्ती का संयुक्त आयोजन		16
• त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन		17
• वर्षा संजय अतिथिगृह में स्वागत कक्ष का निर्माण एवं भोजनालय का नवीनीकरण		17
• विश्वविद्यालय के उल्लेखनीय शोधार्थी		18
• जीवनोपयोगी शिक्षा के लिए एक नई पहल		18
विश्व पटल पर जैन विश्व भारती		
ह्यूस्टन सेंटर (यू.एस.ए)		19
विदेश के केन्द्रों की गति-प्रगति		21
साहित्य		
• पर्यावरण और प्रदूषण / *आचार्य महाप्रज्ञ*		23
• महाप्रज्ञ साहित्य संवर्धन योजना		28
• आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में नेपाल-विहार तेरापंथी सभा द्वारा ज्ञानाचार के अन्तर्गत सहयोग		29
सिकता पर अंकित शिलालेख		
• जैन विश्व भारती : एक तपोभूमि / *समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा*		30
• मैत्री और प्रेम का प्रतीक / *अर्चना जैन*		31
• अध्यात्म और शांति का साकार स्वरूप / *सोना ठक्कर*		31
• सामंजस्य और सौहार्द का सुरम्य स्थल / *सविता रुणवाल*		31
• An Unique Atmosphere / Puebla		
नींव के पत्थर		
• जैन विश्व भारती के कल्पनाकार : समाज भूषण स्व.भंवरलाल जी दूगड़		32
अर्हता को अभिमान		
• श्री मांगीलाल सेठिया "समाजभूषण" सम्मान से अलंकृत		33
• बधाई !		33
दिशा पथ : समझ और समझौता / *धर्मचन्द चौपड़ा, पूर्व अध्यक्ष*		34
संस्मरण		
• धर्म प्रभावना का अनूठा उपक्रम : ह्यूस्टन सेंटर / *बंसीलाल सुराणा, लुधियाना*		35
• प्रतिकूलता में अनुकूलता / *सरला दूगड़*		35
उल्लेखनीय अवदान		
• महादेवलाल गंगादेवी सरावगी फाउण्डेशन : संघ समर्पित प्रकल्प		36
विविधा : प्रश्न मंच प्रतियोगिता		37
बाल मंच		
• क्या आप जानते हैं? / *नलिनी सिंह*		38
• महाप्रज्ञ स्कूल हमारा / *वैशाली जैन*		38
कृती कर्मी : संस्थान के सेवाभावी कर्मी : श्री हुकमाराम जाट		38
पाठकीय प्रतिक्रिया		39
• Gobindlal Saraogi • टोडरमल लालानी • पदमचंद पटावरी • राजकरन सिरोहिया • भंवरलाल सिंघी • शुभकरण नवलखा • कल्पना बैद • Rajeev Chhajer		

उपोद्घात

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी स्वप्नदृष्टा थे। वे अपने हर स्वप्न को यथार्थ का धरातल प्रदान करने के लिए सदैव सचेष्ट रहते थे। उनका एक स्वप्न था कि जैन विद्या का व्यापक प्रचार-प्रसार हो, जैन विद्वान तैयार हों, जैन आगमों का अंग्रेजी में अनुवाद हो और वे विदेशों में भी पहुँचे। उनके इस स्वप्न की संपूर्ति का माध्यम बनी - जैन विश्व भारती। वह प्रारंभ से लेकर अब तक अनेक उतार-चढ़ावों को पार करती हुई उत्तरोत्तर विकास के सोपान पर आरोहण कर रही है। लाडनूं में स्थित नेहरू पार्क जितने क्षेत्र से प्रारंभ हुई जैन विश्व भारती ने आज तेरह एकड़ जमीन पर अपने पांव फैला लिए हैं। शिक्षा, शोध, सेवा, साधना, साहित्य, संस्कृति और समन्वय आदि की दृष्टि से यह संस्था महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे भी इस संस्था के साथ प्रारंभिक क्षणों से ही संबद्ध होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जब जैन विश्व भारती का प्रारंभ हुआ था, मैं मुमुक्षु के रूप में पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययन व साधना कर रही थी। सन् 1980 में समणश्रेणी का प्रादुर्भाव हुआ। मुझे प्रथम बैच में दीक्षित होने का स्वर्णिम अवसर मिला। तब से मैं इस संस्था के साथ प्रत्यक्षतः जुड़ गई।

गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के सपनों को जैन विश्व भारती के प्रत्येक विभाग ने आज साकार किया है। आचार्यवरों ने हमें विभिन्न विभागों के साथ जुड़कर कार्य करने की अभिप्रेरणा दी थी, साथ ही प्रेक्षाध्यान पत्रिका के संपादन का कार्य भी सौंपा। डॉ. नथमल टाटिया, जो बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान थे, के निर्देशन में समणीवृंद को गंभीर अध्ययन करने का अवसर उपलब्ध हुआ। कुछ समय पश्चात जैन विश्व भारती को विश्वविद्यालय का दर्जा मिल गया। गुरुदेवश्री ने चाहा कि समणीवृंद विश्वविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन का कार्य संभाले। शनैः शनैः समणीवृंद ने उस कार्य को भी अपने हाथों में ले लिया। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के प्रारंभ के प्रथम दिन से लेकर आज तक समणीवृन्द का सुयोग निरंतर उपलब्ध हो रहा है। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का सपना सच्चाई में बदल रहा है।

अपेक्षा है कि मातृ संस्था जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय, दोनों के समन्वयपूर्ण चिंतन और विकास में न केवल समण श्रेणी अपितु समाज की प्रत्येक संस्था अपनी सक्रिय भूमिका अदा करे तथा जैन धर्म एवं तेरापंथ को एक नई पहचान देने में अपने समय, शक्ति और श्रम को सुनियोजित ढंग से लगाकर पूज्यवरों के सपनों को साकार करें।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा

अध्यक्षीय

आचार्य तुलसी ने युग की आवश्यकता को समझते हुए जैन विश्व भारती के नाम से एक विश्वस्तरीय संस्थान की स्थापना की, जो अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय कर एक शांतिपूर्ण समाज संरचना का कार्य कर रही है। शिक्षा, साहित्य, साधना, सेवा आदि क्षेत्रों में विविध गतिविधियों का संचालन कर जैन विश्व भारती पूज्यप्रवरों की अहिंसक समाज के निर्माण की संकल्पना को मूर्त रूप देने में सतत क्रियाशील है।

श्रेष्ठ, समुन्नत तथा सुसभ्य समाज के निर्माण का एक महत्वपूर्ण आधार है - **'शिक्षा'**। वस्तुतः आधुनिक शिक्षा बाह्य जगत और बाह्य संबंधों के सन्दर्भ में बहुत जानकारी प्रदान करती है, किन्तु उन उच्च जीवन मूल्यों के संबंध में मौन है जो एक सभ्य समाज के लिए आवश्यक है। जैन विश्व भारती प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च स्तरीय शिक्षा के साथ-साथ मूल्यपरक शिक्षा के विकास के लिए भी कटिबद्ध है। जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान और जैन विद्या के द्वारा जैन विश्व भारती व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर है। जिसका ध्येय सूत्र है - 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।'

जैन विश्व भारती जीवन निर्माण की शिक्षा के साथ-साथ आज जीवन को दिशा देने वाले अतुलनीय साहित्य संपदा के प्रकाशन, प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। पूज्यप्रवरों के अनमोल वचन, जीवन दिशाबोधक एवं साधना इत्यादि समसामयिक विषयों पर इस संस्था के द्वारा अनेक साहित्य प्रकाशित किए जा रहे हैं। तेरापंथ धर्मसंघ की अमूल्य साहित्य संपदा को विश्व क्षितिज तक पहुँचाने में जैन विश्व भारती नई ऊर्जा और नई दृष्टि के साथ आगे बढ़ रही है।

'कामधेनु' का द्वितीय अंक आपके हाथों में पहुँचाते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। प्रवेशांक के बारे में पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं से हमें आत्मतोष का अनुभव हुआ है और हम चाहते हैं कि पाठक हमारे प्रत्येक अंक के बारे में अपनी स्पष्ट राय हमें निरंतर भेजते रहें।

हम आशा करते हैं कि 'कामधेनु' का प्रकाशन जिन उद्देश्यों को लेकर प्रारंभ किया गया है, उस दिशा में वह अनवरत गतिशील रहेगी।

सुरेन्द्र चोरड़िया

संपादकीय

सड़क ने एक दिन मील के पत्थर से पूछा - "तुम लोग मेरे दाएं-बाएं, एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक, मेरे चारों ओर क्यों खड़े रहते हो, मुझे अपनी सीमा में बाँधने के लिए या मुझे अपने अनुसार चलाने के लिए?" मील के पत्थर ने प्रत्युत्तर में कहा - "बहिन! हम न तो तुम्हें अपनी सीमा में बांधना चाहते हैं और न ही तुम्हें अपने अनुसार चलाना चाहते हैं। हम तो सिर्फ आने-जाने वाले यात्रियों का मार्गदर्शन करते हैं और उनकी मंजिल के पड़ावों का बोध करवाते हैं।"

जैन विश्व भारती की गतिविधियों को प्रतिबिंबित करने वाली यह "कामधेनु" इस संस्था से जुड़े व्यक्तियों को ही नहीं, संपूर्ण तेरापंथ समाज को संस्था के क्रियाकलापों और संभावनाओं के पड़ावों का बोध करवाने का प्रयास कर रही है।

अपनी स्थापना से लेकर अब तक जैन विश्व भारती ने आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण त्रयी के स्वप्नों और इंगित को साकार करने की दिशा में विविध कदम उठाए हैं। इस संस्था के माध्यम से संस्कारी शिक्षा के उपक्रम, जैन दर्शन एवं जैनागमों के शोध की योजनाएं, जैन साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं प्रकाशन का कार्य, प्रेक्षाध्यान की साधना के विविध प्रकल्प, श्रावक समाज एवं चारित्रात्माओं की सेवा संबंधी गतिविधियां, जैन धर्म एवं तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन तथा तेरापंथ धर्मसंघ के व्यापक प्रचार-प्रसार व विस्तार हेतु समन्वय के अनेक कार्य संचालित किए जा रहे हैं।

"सप्तसकार" को केन्द्र में रखकर कार्य करने वाली यह संस्था गुरु के आशीर्वाद, समाज के सहयोग एवं सक्षम कार्यकर्ताओं के प्रयासों के फलस्वरूप अनेक मानव कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन कर रही है। चार दशक की यात्रा में जैन विश्व भारती ने अनेक पड़ावों को पार किया है, किंतु गंतव्य सुदूर ऊँचाई पर पहुँचकर ही प्राप्त किया जा सकता है। संस्था के सूत्रधारों के समक्ष संभावनाओं का असीम आकाश भी है और उसे प्राप्त करने का उत्साह, उमंग और जज्बा भी। जैन विश्व भारती आचार्य तुलसी के वचनसिद्ध शब्द "कामधेनु" की विशेषताओं का प्रत्येक क्षेत्र में पर्याय बने और यह "कामधेनु पत्रिका" उसे साकार करने का साधन, यही अपेक्षित है। इस भावना के साथ कामधेनु का दूसरा अंक प्रस्तुत है :

"परिंदों ने एक उड़ान भरी है
पंखों का इम्तिहान अभी बाकी है
अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीं
पूरा आसमान अभी बाकी है।"

डॉ. वन्दना कुण्डलिया

पुनश्च : *जैन विश्व भारती परिवार के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे कामधेनु में प्रकाशनार्थ अपने आलेख, रचनाएं, विचार, संस्मरण, उल्लेखनीय उपलब्धियां आदि पत्रिका में दिए गए पते पर प्रेषित करें।*

पंचाचार आराधना की ओर बढ़ते कदम

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर जैन विश्व भारती की ओर से पूज्य प्रवर की अभिवन्दना करते हुए अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया।

इस वर्ष तेरापंथ धर्मसंघ के एकाधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी अपने जीवन के पांच दशक पूर्ण कर रहे हैं। इस पावन अवसर (वैशाख शुक्ल 9 वि. सं. 2069) को चतुर्विध धर्मसंघ 'अमृत महोत्सव' के रूप में मना रहा है। इस विशिष्ट आयोजन पर जैन विश्व भारती की ओर से पूज्यप्रवर की वर्धापना करते हुए हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। हम यह मंगल कामना करते हैं कि आचार्य प्रवर चिरायु एवं शतायु हों तथा उनके आध्यात्मिक नेतृत्व में धर्मसंघ विकास के नए कीर्तिमान स्थापित करे। संपूर्ण मानव जाति उनके उपदेशों को आत्मसात कर कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो।

अमृत महोत्सव में करणीय कार्य

पंचाचार की आराधना

ज्ञानाचार

साधु-साध्वियों, समण श्रेणी द्वारा उत्तराध्ययन का अर्थ सहित वाचन।
सप्ताह में एक बार श्रुत सामायिक का प्रयोग (यथासंभव गुरुवार को)।
महीने में एक दिन लेखन, वक्तृत्व, गायन के क्षेत्र में दक्षता बढ़ाने के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन (यथासंभव शुक्ला 9 को)।
अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं पर कार्यशालाओं का आयोजन।
निर्धारित विषयों पर साहित्य सृजन का प्रयास।
आचार्य महाश्रमण द्वारा रचित साहित्य का व्यवस्थित प्रकाशन और प्रसार।
विश्वविद्यालयों में जैन दर्शन पर व्याख्यान।
श्रावक समाज द्वारा श्रावक संबोध : कण्ठस्थ व वाचन।

दर्शनाचार

तेरापंथी परिवारों की सार संभाल का अभियान। आस्था का दृढ़ीकरण।
दर्शनाचार से संबंधित आचार्य प्रवर की विशेष प्रवचनमाला का आयोजन।

चारित्राचार

अधिकाधिक व्यक्तियों को बारहव्रती बनाने का प्रयास।
नशामुक्ति की प्रेरणा (विशेष रूप से समाज में)।

तप आचार

तप-पचरंगी का विधिवत प्रयोग।
जप-नमस्कार महामंत्र।

वीर्याचार

ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में सलक्ष्य शक्ति का नियोजन।
सेवा एवं कला के क्षेत्र में विशेष पुरुषार्थ।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

अतीत के वातायन से

गतांक से आगे .....

श्री भंवरलालजी दूगड़ के देहावसान के बाद यद्यपि एक बार इस जैन विश्व भारती की स्थापना के चिंतन पर विराम लग गया किन्तु भंवरलालजी दूगड़ ने जैन विश्व भारती के निर्माण एवं कार्यों के संबंध में एक योजना का निर्माण किया था जो भविष्य में उसकी आधारशिला बनी।

जैन वाङ्मय की प्राक्तन रचनाएँ तत्कालीन जनभाषा प्राकृत में हैं, अतः इस भाषा का गंभीर अध्ययन भी सहज ही इसके साथ समाविष्ट हो जाता है। इस अपेक्षा की पूर्ति अथवा तद्गत कार्यों के निर्वहन के लिए यह सर्वथा वांछनीय है कि इस प्रकार इस बृहत प्रतिष्ठान स्थापित किया जाए।

रूपरेखा की स्थूल परिकल्पना निम्नांकित है --

नाम - इस प्रतिष्ठान का नाम जैन विश्व भारती होगा।

स्थान - इसका केन्द्र सरदारशहर (राजस्थान) में रहेगा।

उद्देश्य

इसके निम्नांकित उद्देश्य होंगे --

1. जैन वाङ्मय, दर्शन एवं परम्परा का तुलनात्मक अध्ययन, परिशीलन व शोध।
2. विभिन्न जैन सम्प्रदायों, संस्थानों, समाजों, संगठनों आदि में पारस्परिक नैकट्य, सौहार्द व समन्वयपूर्ण एकता उत्पन्न करने का प्रयास।
3. जैन दर्शन के अहिंसा एवं अनेकांत मूलक विश्वजनीन आदर्शों का राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसार।
4. देश के विभिन्न विद्यालयों, कॉलेजों तथा शिक्षण संस्थानों में जैन दर्शन एवं प्राकृत को एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्वीकृत/चालू कराए जाने का बहुमुखी प्रयास।
5. अनुपलब्ध एवं अप्रकाशित जैन वाङ्मय का अन्वेषण, संरक्षण एवं प्रकाशन।
6. जैन तत्त्वज्ञान के आधार पर अभिनव साहित्य का सर्जन तथा प्रकाशन।
7. उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए जैन दर्शन, जीवन शुद्धिपरक, संयमोन्मुख आदर्शों के व्यापक प्रचार, अहिंसामूलक वातावरण की सृष्टि तथा जैन तत्त्वज्ञान, साहित्य व इतिहास आदि पर विशेष गवेषण के निमित्त मासिक, त्रैमासिक, षटमासिक आदि आवश्यक व सुविधानुसार पत्र-पत्रिकाओं का संचालन।
8. जैन दर्शन के उच्चतर अध्ययन, अनुशीलन हेतु मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था।
9. जैन दर्शन और संस्कृति परिषद का आयोजन।

प्रवृत्तियाँ

1. **अनेकांत महाविद्यालय की स्थापना**

   इसमें छात्रों का जैन दर्शन का विधिवत तुलनात्मक अध्ययन कराया जाएगा।

2. **शोध-संस्थान की स्थापना**

यहां जैन दर्शन के उच्चस्तरीय तुलनात्मक अध्ययन, परिशीलन एवं अनुसंधान की व्यवस्था होगी।

इसमें वे छात्र सम्मिलित किए जा सकेंगे, जिन्होंने संस्कृत या प्राकृत के साथ बी.ए. परीक्षा और साथ ही साथ संस्था की ओर से संचालित बहुश्रुत अथवा तत्समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की हो।

व्यवस्थित एवं सुनियमित अध्ययन - परिपाटी आदि के परिचालनार्थ एक शिक्षा उपसमिति रहेगी जो शिक्षा

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

संबंधी पाठ्यक्रम, परीक्षाएं, अध्ययन-काल, विषय आदि का निर्णय एवं संचालन करेगी।

शोध-संस्था की दो शाखाएं होंगी -

(क) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

इसमें राजस्थान विश्वविद्यालय की संस्कृत, प्राकृत में जैन दर्शन के विशेष पत्र के साथ एम. ए. परीक्षा के लिए छात्रों को तैयार किया जाएगा।

(ख) अनुसंधान

एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्रों के लिए भाषात्मक, साहित्यिक, सैद्धांतिक व ऐतिहासिक प्रवृत्ति जैन तत्त्वज्ञान संबंधी विषयों पर अनुसंधान की व्यवस्था रहेगी।

3. **जैन छात्रावास की स्थापना**

यहां हाई स्कूलों एवं कॉलेजों के छात्रों के निवास की व्यवस्था रहेगी।

छात्रों के दैनन्दिन व्यवहार में अहिंसा, सदाचार एवं नैतिकता की सहज व्याप्ति आए, छात्रावास के वातावरण निर्माण में इस ओर विशेष प्रयास रहेगा।

इसके लिए छात्रावास में तत्त्व शिक्षण की कक्षा नियमित रूप से लगाई जाएगी और उपर्युक्त भावना के विकास एवं उन्नयन के लिए समय-समय पर गोष्ठियां, विचार-परिषदें आदि आयोजित की जाती रहेंगी।

छात्रावास का संचालन छात्रावास उपसमिति द्वारा किया जाएगा।

4. **प्रकाशन पीठ**

   प्रकाशन संबंधी समस्त कार्य इस पीठ के अंतर्गत संचालित होंगे। यह पीठ विशेषतः निम्नांकित साहित्य का प्रकाशन करेगा।

(1) प्राकृत, संस्कृत, मारवाड़ी तथा हिंदी आदि आधुनिक भाषाओं में विद्यमान प्राचीन जैन वाङ्मय।
(2) उपर्युक्त ग्रंथों के वैज्ञानिक एवं समीक्षात्मक रीति से सुसम्पादित संस्करण।
(3) इस प्रकार के ग्रंथों के अंग्रेजी, हिन्दी आदि आधुनिक भाषाओं में अनुवाद।
(4) जैन तत्त्वज्ञान संबंधी आध्यात्मिक, साहित्यिक, सैद्धांतिक तथा ऐतिहासिक आदि शोधात्मक प्रबंध।
(5) जैन तत्त्वज्ञान संबंधी पाठ्यक्रम एवं प्रचारोपयोगी साहित्य, पत्र-पत्रिकाएं आदि का प्रकाशन भी इस पीठ के अंतर्गत चलेगा। यह पीठ एक प्रकाशन पीठ उपसमिति द्वारा परिचालित होगा।

5. **श्रुतमंच**

   प्राकृत, संस्कृत, तत्त्वदर्शन एवं वाङ्मय के विविध अंगोपांगों पर सूक्ष्म पर्यालोचन, विचारमंथन, विवेचन व विश्लेषण आदि का अभिप्रेत लिए इस मंच के अंतर्गत समय-समय पर सेमिनार, गोष्ठियां, परिषदें तथा जन-सभाएं आयोजित की जाती रहेंगी, जिनमें देश-विदेश के प्रतिष्ठित विद्वान, विचारक, दार्शनिक तथा साहित्यकार आमंत्रित किए जाएंगे। तत्संबंधी व्यवस्था एवं कार्य-संचालन के लिए एक श्रुतमंच उपसमिति रहेगी।

(प्रस्तुति - मुनिश्री मोहजीतकुमारजी)

***द्रष्टव्य** - आचार्य महाप्रज्ञ की प्रेरणा से जैन विश्व भारती के इतिहास लेखन के दुरूह कार्य को मुनिश्री मोहजीतकुमारजी ने प्रारंभ किया। मुनिश्री मोहजीतकुमारजी के अथक परिश्रम और पुरुषार्थ के कारण ही आज यह दुर्लभ इतिहास 'कामधेनु' के माध्यम से जनसुलभ हो रहा है। इस हेतु मुनिश्री के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से कृतज्ञता।*

***नोट** - पिछले अंक प्रस्तुत की गई जैन विश्व भारती के इतिहास की कड़ी भी मुनिश्री मोहजीतकुमारजी के इतिहास लेखन के कार्य से उद्धृत है। इस संबंध में पूर्व में जानकारी मूलवश पाठकों को नहीं दी गई, एतदर्थ क्षमायाचना।*

क्रमशः अगले अंक में ...

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

जैन विश्व भारती परिकल्पना का सत्व

मुनि मोहजीत कुमार
(जैन विश्व भारती के इतिहास लेखक)

जैन विश्व भारती की परिकल्पना के पीछे जैन शासन की प्रभावना और भगवान महावीर की वाणी का जन-जीवन के आचार के साथ जोड़ना है। जैन धर्म भारतवर्ष का एक महान धर्म है। जैन धर्म ने कुछ बातें, कुछ सिद्धान्त और कुछ तत्त्व ऐसे अद्भुत दिए हैं कि उन सिद्धान्तों-तत्वों को जन व्यापी बनाने के लिए आधार स्तम्भ के रूप में जैन विश्व भारती का प्रारूप सामने आया।

जैन विश्व भारती के प्रारूप के सामने तीन बातें मुख्य थीं - प्रथम शोध की, दूसरी शिक्षा की एवं तीसरी साधना की।

शोध यानी ज्ञान का विकास।

शिक्षा यानी दृष्टिकोण का निर्माण।

साधना यानी चरित्र का निर्माण।

तीनों का सम्यक् विकास जैन विश्व भारती का मूल सत्व था।

शोध - यह ज्ञान को विस्तार देने की प्रक्रिया है। इसके माध्यम से धर्म, दर्शन, भाषा, ज्योतिष, गणित, इतिहास आदि प्राच्य विद्याओं की जितनी शाखाएं हैं, उन शाखाओं के माध्यम से उनका अन्वेषण, गवेषण और अनुसंधान किया जा सकता है।

महान योगी भद्रबाहु से पूछा गया - ज्ञान का सार क्या है? उन्होंने कहा - 'नाणस्स सारं आयारे।'

ज्ञान का सार आचार है। इस सार की प्राप्ति का आधार है शोध, जिसके माध्यम से नई बातें, नया दर्शन सामने आ सकता है।

शिक्षा - इस प्रकल्प में लौकिक और अलौकिक दोनों शिक्षाओं का समावेश है। जैन विश्व भारती के माध्यम से इस प्रकार के वातावरण का निर्माण करना होगा, जिससे सही दृष्टिकोण का निर्माण हो। सम्यक् जीवन के दृष्टिकोण का निर्माण हो और साथ-साथ चिन्तन और भाव का सही निर्माण हो। ज्ञान के सार को आचार में प्रकट करने के लिए हमें प्रायोगिक दर्शन से ज्ञान की क्रियान्विति का पुरुषार्थ करना होगा। जिस ज्ञान में आचार का फल नहीं लगता, वह ज्ञान मात्र शब्दों का पुलिन्दा होता है। हर आदमी पहले फल को ध्यान में रखकर वृक्ष को सींचता है। अनाज को ध्यान में रखकर फसल को सींचता है। अनाज न लगे, फल न लगे तो उसे कोई नहीं सींचता। उस ज्ञान को भी हम नहीं सींच सकते, जिस ज्ञान का कोई फल आचार में न लगे। ज्ञान का फल है आचार। ज्ञान और आचार दोनों मिलकर हमारे धर्म और दर्शन को पूर्ण बनाते हैं।

साधना - जैन विश्व भारती की परिकल्पना में तीसरा प्रकल्प था साधना का। इस प्रकल्प के प्रयोग से व्यक्तिगत जीवन में चरित्र का, ध्यान का, आसन - प्राणायाम का और मानसिक शक्ति का विकास करना है। शान्त जीवन जीने का अभ्यास, मन और भावों में सामंजस्य का विकास, आवेश और आवेग मुक्ति की दिशा में प्रस्थान आदि आत्मिक एवं व्यावहारिक परिवेश को सुसंस्कृत बनाने का लक्ष्य ही जैन विश्व भारती की साधना की प्रवृत्ति में है।

जैन विश्व भारती की प्रारम्भिक परिकल्पना में मुख्यतः शिक्षा, शोध और साधना का ही लक्ष्य था। इसके बाद कल्पना का विस्तार हुआ, जिसका परिणाम सप्त सकार शिक्षा, शोध, साधना, सेवा, साहित्य, संस्कृति और समन्वय के रूप में आया।

सन् 1971 में आचार्य तुलसी ने स्वयं प्राणप्रण से इस परिकल्पना को क्रियान्वित करने का मानस बनाया। यह बड़ी महत्वाकांक्षी योजना थी, जिसमें सप्त सकारों के माध्यम से जैन-मान्यताओं, परम्पराओं और संस्कृति के अध्ययन-अध्यापन की बात सोची गई थी।

जैन विश्व भारती की सतत प्रवाही सप्त सकार की प्रवृत्ति आध्यात्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक जीवन में अपनी उपादेयता सिद्ध करे, इसके लिए वह अतीत से वर्तमान तक निरन्तर प्रयत्नशील है। ■

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

[जैन विश्व भारती के अन्तर्गत अनेक संस्थाएं एवं संगठन विभिन्न क्षेत्रों में कार्यशील हैं। ये संस्थाएं एक ओर जहां अपने निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्य कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर जैन विश्व भारती की वर्धापना में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली एक ऐसी संस्था है - महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर।]

शिक्षा के क्षेत्र में परम्परा और आधुनिकता का समावेश कर एक संतुलित शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से जैन विश्व भारती के अन्तर्गत महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की स्थापना दिनांक 6 अप्रैल 2006 को निर्माण नगर, जयपुर में की गई। स्वच्छ एवं हरे-भरे परिवेश में स्थित अंग्रेजी माध्यम का यह विद्यालय 80 विद्यार्थियों से प्रारंभ हुआ और आज इसमें लगभग 200 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। आधुनिक सुविधाओं एवं तकनीकों से युक्त तथा उपयुक्त संरचना वाला यह सह-शैक्षिक विद्यालय आचार्य महाप्रज्ञ के शैक्षिक विचारों के साथ विद्यार्थियों के भविष्य-निर्माण हेतु कटिबद्ध है।

सी.बी.एस.ई. द्वारा निर्धारित सी.सी.ई. प्रणाली पर आधारित इस विद्यालय की शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ रचनात्मक शक्ति को भी विकसित करती है। विद्यालय में कम्प्यूटर लैब के अतिरिक्त श्रव्य-दृश्य पद्धति (Audio Visual) द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का माध्यम बनती है। विभिन्न विषयों से संबंधित पर्याप्त पुस्तकों से समृद्ध पुस्तकालय विद्यार्थियों के ज्ञान की अभिवृद्धि में सहायता करता है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को भारतीय सभ्यता और संस्कृति का समुचित ज्ञान करवाने के लिए इस संस्थान में महत्वपूर्ण पर्वों एवं त्यौहारों को उत्साह व उल्लास के साथ मनाया जाता है।

इस विद्यालय के समर्पित, प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकगण विद्यार्थियों के विकास हेतु प्रयत्नशील हैं। महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल में समुचित शिक्षा के साथ-साथ अन्य शैक्षणिक गतिविधियों पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाता है, ताकि विद्यार्थियों की अन्तर्निहित प्रतिभाएं उभर कर सामने आएं और उनमें निखार आ सके। इसी उद्देश्य को केन्द्र में रखकर विद्यालय में विद्यार्थियों को नृत्य, संगीत, अबेकस, वोकल म्यूजिक, टाइक्वाण्डो, आर्ट एवं क्राफ्ट, योग, ऐरोबिक्स, नाटकला आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके साथ ही प्रत्येक शनिवार को कहानी, निबंध, कविता, नाटक, मूकाभिनय एवं खुला मंच आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। छोटे बच्चों के लिए निर्मित किंडरगार्डन का परिवेश एवं वातावरण बच्चों को आनन्द और उत्साह से भर देता है, जिससे वे विद्यालय से अन्तरंगता से संबद्ध हो जाते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ के शैक्षिक अवदान जीवन विज्ञान को केन्द्र में रखकर यह विद्यालय प्रगति की राह पर बढ़ रहा है। वर्तमान में इस स्कूल में नर्सरी से लेकर कक्षा 8 तक की शिक्षा दी जा रही है। यह शिक्षण संस्थान अभी अपनी शैशवावस्था में है। आशा है कि समाज, सहयोगियों एवं शुभचिन्तकों के सामूहिक सहयोग से यह विद्यालय भविष्य में एक अभिनव और विशिष्ट शिक्षण संस्थान के रूप में अपनी पहचान बनाएगा। ■

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

जैन विश्व भारती : 'अतिथिदेवो भव' की संवाहिका

भारतीय संस्कृति की अनेक ऐसी विशेषताएं हैं जो आज भी भारत को विश्व मानचित्र पर एक अलग स्थान देती हैं। ऐसी ही एक विशेषता है - अतिथि देवो भवः की भावना का क्रियान्वयन।

जैन विश्व भारती अपने बहुआयामी उपक्रमों के फलस्वरूप राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। अतः विभिन्न राष्ट्रों एवं प्रान्तों के लोगों का यहां निरन्तर आवागमन बना रहता है। इस आगमन के कारण अतिथियों को उचित आतिथ्य मिल सके, इसके लिए जैन विश्व भारती में 'अतिथि देवो भवः' की अक्षुण्ण परम्परा का निर्वहन करते हुए अनेक अतिथिगृहों का निर्माण समय-समय पर करवाया गया। विभिन्न सुविधाओं और साधनों से सम्पन्न परिसर के अतिथिगृह आगन्तुकों एवं अतिथियों को मनोरम आवास का आश्वास प्रदान करते हैं। प्रस्तुत है जैन विश्व भारती परिसर में स्थित अतिथिगृहों का संक्षिप्त परिचय :-

शुभम् अतिथि गृह

सन् 1975 में श्री मन्नालालजी सुराणा, सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से इस अतिथिगृह का निर्माण करवाया गया, जिसका नाम प्रारंभ में 'सत्कार' रखा गया था। कालांतर में अतिथिगृह का यथापेक्षित नवीनीकरण होता रहा तथा अतिथियों की शुभता एवं शुभ भावना के आधार पर इसका नाम "शुभम्" रखा गया। इस दो मंजिला भवन में 6 साधारण कमरे एवं 7 वातानुकूलित कमरे हैं। आगंतुक यात्रियों के सुविधार्थ यहां एक कैफेटेरिया भी संचालित है।

वर्षा संजय सदन

जैन विश्व भारती के विशाल प्रमुख द्वार के सम्मुख पंजाब भवन और युवालोक के मध्य अवस्थित वर्षा संजय सदन सुराणा परिवार द्वारा निर्मित है। इस अतिथि गृह का पूर्व नाम सुराणा गेस्ट हाउस था। वर्तमान में यह भवन वर्षा संजय सदन के नाम से अभिहित है। इस तीन मंजिले भवन में 34 कमरे हैं। इस भवन के प्रवेश द्वार के पूर्वी भाग में संस्था द्वारा आगन्तुक अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था हेतु भोजनशाला संचालित है। वर्तमान में इस भवन के प्रवेश द्वार पर ही जैन विश्व भारती का स्वागत कक्ष निर्मित किया गया है, जिससे बाहर से आने वाले यात्री यहां से संस्था के संदर्भ में सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अभी हाल ही में संजय सदन में स्वागत कक्ष का निर्माण एवं भोजनालय का नवीनीकरण किया गया है।

परंपरा के प्रतिमान

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

सागर अतिथिगृह

परिसर में कामधेनु उद्यान के पीछे सागर गेस्ट हाउस का निर्माण लाडनूं निवासी स्व. सागरमलजी बरमेचा के सुपुत्रों - श्री भंवरलाल, श्री शुभकरण, श्री उमरावमल, श्री निर्मल कुमार बरमेचा द्वारा करवाया गया। इस एक मंजिले अतिथि गृह में 8 सुसज्जित वातानुकूलित कमरे, एक हॉल एवं एक रसोईघर अवस्थित है। इस अतिथि गृह को उदित सूर्य की किरणेंऔर चमकदार बना देती है क्योंकि इसका अग्रभाग पूर्वाभिमुखी है।

सुमेरु अतिथि गृह

स्व. सुमेरमलजी पटावरी की स्मृति में उनके पुत्र श्री कन्हैयालाल पटावरी द्वारा सन् 1990 में इस अतिथिगृह का निर्माण करवाया गया, जिसमें कुल चार (4) कमरे हैं।

> अतिथिः पूजितो यस्य गृहस्थस्य तु गच्छति।
> नान्यस्तस्मात्परोधर्म इति प्राहुर्मनीषिणः।।
>
> जिस गृहस्थ का अतिथि पूजित होकर जाता है, उसके लिए उससे बड़ा अन्य धर्म नहीं है - मनीषी पुरुष ऐसा कहते हैं।
>
> - वेदव्यास (महाभारत)

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

आचार्य तुलसी की पुण्यतिथि का आयोजन

आचार्य तुलसी के पन्द्रहवें महाप्रयाण दिवस पर जैन विश्व भारती में दो चरणों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम का प्रथम चरण जैन विश्व भारती स्थित 'आचार्य तुलसी स्मारक' पर मनाया गया, जिसमें समणीवृंद, श्रावक-श्राविकाएं एवं जैन विश्व भारती के सदस्यगण उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रो. मुनि श्री महेन्द्र कुमार जी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने जैन विश्व भारती जैसी अनेक संस्थाओं के माध्यम से चरित्र निर्माण के व्यापक अभियान चालू किए थे। मुनिश्री अजीत कुमार जी, मुनिश्री अभिजीत कुमार जी एवं मुनिश्री आदित्य कुमार जी ने तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता के प्रति अपनी श्रद्धा-प्रणति प्रस्तुत की। इस अवसर पर श्री कन्हैयालालजी छाजेड़, डॉ. मुमुक्षु शांता जैन, प्रो. जे. पी. एन. मिश्रा आदि ने भी अपनी श्रद्धांजलि दी तथा कार्यक्रम के अन्त में जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने आभार ज्ञापित किया।

इस कार्यक्रम का दूसरा चरण सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वीश्री जिनरेखाजी एवं समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी के सान्निध्य में भजन-संध्या के रूप में मनाया गया। समणीवृंद द्वारा तुलसी-अष्टकम् के संगान से प्रारंभ हुई भजन-संध्या में लाडनूं के प्रसिद्ध गायक श्री मनोज दाधीच ने अपने मधुर स्वरों में प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं, समणीवृंद, समण संस्कृति संकाय की बहनें, श्री हेमन्त नाहटा, श्री हिमांशु मालपुरी, श्री प्रभात अरीड़ा, श्रीमती रेणु कोचर, श्रीमती मैना नाहटा आदि ने गीतों के माध्यम से आचार्य तुलसी को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी जिनरेखाजी एवं समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी एवं समणी कुसुमप्रज्ञाजी एवं नगरपालिका के अध्यक्ष श्री बच्छराज नाहटा ने आचार्य तुलसी के जीवन प्रसंगों का उल्लेख करते हुए अपने श्रद्धा भाव अभिव्यक्त किए। जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने गीत के माध्यम से अपने श्रद्धाभाव प्रस्तुत करते हुए सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. समणी सत्यप्रज्ञाजी ने किया।

जैन विश्व भारती परिसर में स्थित आचार्य तुलसी स्मारक

आचार्य महाप्रज्ञ के 92वें जन्मदिवस का 'प्रज्ञा दिवस' के रूप में आयोजन

जैन विश्व भारती स्थित अहिंसा भवन में आचार्य महाप्रज्ञ का 92वां जन्म दिन 'प्रज्ञा दिवस' के रूप में प्रो. मुनि श्री महेन्द्र कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। 'साहित्य जगत को आचार्य महाप्रज्ञ की देन' विषय को केन्द्र में रखकर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्यिक अवदान को स्पष्ट किया। प्रो. मुनि श्री महेन्द्र कुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्यिक वैशिष्ट्य को रेखांकित करते हुए उनके साहित्य को युगान्तरकारी बताया। तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं की बहिनों के मंगलाचरण से प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में तेरापंथ कन्यामंडल, मुनि श्री अभिजीत कुमार जी, मुनि श्री आदित्य कुमार जी, नगरपालिका अध्यक्ष श्री बच्छराज नाहटा, वरिष्ठ श्रावक श्री कन्हैयालाल छाजेड़, 'पंजाब केसरी' समाचार पत्र के संवाददाता श्री शंकर आकाश, 'भारतीय समाज' के संपादक श्री आलोक खटेड़ ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व और कर्तृत्व को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत कर उनकी अभिवन्दना की। जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्यिक अवदानों का उल्लेख करते हुए 'आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य संवर्धन योजना' की घोषणा की। इस योजना के तहत सर्वप्रथम आचार्य महाप्रज्ञ की 92 पुस्तकों का सेट ओसवाल सभा, लाडनूं एवं लाड मनोहर बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय को भेंट किया गया। कार्यक्रम के अन्त में जीवन विज्ञान अकादमी के संयुक्त निदेशक श्री ओमप्रकाश सारस्वत ने आभार ज्ञापित किया।

अहिंसा भवन में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित जन समुदाय

विश्व पर्यावरण दिवस

'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी के पावन सान्निध्य में अहिंसा भवन, जैन विश्व भारती, लाडनूं में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनि श्री आदित्य कुमार जी के मंगलाचरण से प्रारंभ हुए कार्यक्रम में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, सुश्री वीणा जैन, श्री हेमन्त नाहटा आदि ने विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों पर विचार प्रस्तुत करते हुए पर्यावरण की समकालीन समस्या के समाधान हेतु विभिन्न उपाय सुझाये। मुनिश्री अजीत कुमार जी ने गीत के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने पर्यावरण के संदर्भ में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से जैन विश्व भारती में विश्व पर्यावरण दिवस को पर्यावरण जागरूकता अभियान के रूप में मनाया जा रहा है। प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी ने कहा कि केवल एक दिन के समारोह तक हमें इस अभियान को सीमित नहीं रखना है, वरन पूरे वर्ष तक व्यक्ति-व्यक्ति को जागृत कर उन प्रतिज्ञाओं का पालन करवाना है, जो पर्यावरण को बचाने के लिए आवश्यक है।

इस अवसर पर पर्यावरण जागरूकता के लिए वनस्पति संरक्षण, जल संरक्षण, विद्युत संरक्षण एवं स्वच्छता कार्यक्रम से संबंधित जैन विश्व भारती द्वारा कुछ विशेष निर्देश जारी किए गए, जिनकी प्रथम प्रति जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने मुनिश्री को सादर समर्पित की। इन निर्देशों की प्रतियां जैन विश्व भारती में प्रवासित सभी परिवारों को प्रेषित की गई। सभी को इनकी अनुपालना हेतु प्रेरित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनिश्री अभिजीत कुमार जी ने किया।

प्रो. जगतराम भट्टाचार्य अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए

पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

जैन विश्व भारती का 42वां स्थापना दिवस एवं महावीर जयन्ती का संयुक्त आयोजन

जैन विश्व भारती का 42वां स्थापना दिवस एवं महावीर जयंती का पावन पर्व जैन विश्व भारती, लाडनूं में स्थित 'अहिंसा भवन' में प्रभारी संत प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी, साध्वीश्री कमलश्रीजी एवं साध्वीश्री जिनरेखाजी के सान्निध्य में मनाया गया। मुमुक्षु बहनों के मंगलाचरण से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नागौर के जिला कलेक्टर श्री श्याम सुन्दर बिस्सा थे। जिला कलेक्टर ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए जैन विश्व भारती द्वारा संपादित की जाने वाली गतिविधियों को जनकल्याणकारी बताया। जैन विश्व भारती की स्थापना के परिप्रेक्ष्य में अपनी बात प्रस्तुत करते हुए जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने स्थापना दिवस के सन्दर्भ में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया के संदेश का वाचन किया। समारोह की अध्यक्ष जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी, समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, नगरपालिका अध्यक्ष श्री बच्छराज नाहटा, सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी श्री कमलश्रीजी, साध्वी श्री जिनरेखाजी, मुनि श्री अजीत कुमार जी, मुनि श्री अभिजीत कुमार जी आदि ने जैन विश्व भारती एवं भगवान महावीर के जीवन के विविध पहलुओं पर अपनी भावाभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर जैन विश्व भारती को अपनी श्रेष्ठ सेवाएँ प्रदान करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी ने भगवान महावीर के जीवन दर्शन को व्याख्यायित करते हुए जैन विश्व भारती की स्थापना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुमुक्षु डॉ. शान्ता जैन ने किया।

42वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी

नागौर जिला कलेक्टर को जैन विश्व भारती की ओर से मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित करते हुए लाडनूं नगरपालिका के अध्यक्ष श्री बच्छराज नाहटा

जैन विश्व भारती परिसर के सह-व्यवस्थापक श्री सुशील मिश्रा को सम्मानित करते हुए श्री शांतिलाल बैद

42वें स्थापना दिवस समारोह में उपस्थित मुमुक्षु बहनें तथा श्रावक-श्राविका समाज

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

जैन विश्व भारती के अहिंसा भवन में प्रो. मुनि श्री महेन्द्र कुमार जी के सान्निध्य में दिनांक 15-17 अप्रैल, 2011 को त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को प्रेक्षाध्यान के विविध आयामों का सैद्धान्तिक व प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। विभिन्न सत्रों के दौरान मनुष्य के मस्तिष्क एवं व्यवहार पर पड़ने वाले प्रेक्षाध्यान के प्रभावों का ज्ञान पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन के द्वारा करवाया गया। प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी ने प्रेक्षाध्यान के वैज्ञानिक-आध्यात्मिक आधारों की जानकारी प्रतिभागियों को दी तथा विभिन्न प्रयोग करवाए। इस त्रिदिवसीय कार्यशाला में न्यूजीलैण्ड के श्री श्रीकुमार शर्मा एवं श्रीमती रेचल, दिल्ली की उद्योगपति श्रीमती ज्युतिका मेहता, कोटा के प्रेक्षा प्रशिक्षक एवं इंजीनियर श्री किशनलाल सेठिया, मुंबई के श्री रश्मिभाई जवेरी, उज्जैन के प्रशिक्षक श्री मुकेश दीक्षित आदि 14 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। तुलसी अध्यात्म नीडम के व्यवस्थापक श्री जीतमल गुलगुलिया का कार्यशाला की आयोजना में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

वर्षा संजय अतिथिगृह में स्वागत कक्ष का निर्माण एवं भोजनालय का नवीनीकरण

जैन विश्व भारती स्थित वर्षा-संजय सदन अतिथिगृह में दीर्घकालिक अपेक्षाओं को देखते हुए भोजनालय का नवीनीकरण करवाया गया एवं सुविधाओं से युक्त एक स्वागत-कक्ष का निर्माण करवाया गया। अतिथियों एवं आगन्तुकों की सुविधा के लिए निर्मित यह योजना विगत कई वर्षों से विभिन्न कारणों से पूरी नहीं हो पा रही थी। भोजनालय के नवीनीकरण एवं सौन्दर्यीकरण के साथ-साथ स्वागत कक्ष के निर्माण से एक ओर जहां बाहर से आने वाले यात्रियों को सुविधा मिली है वहीं दूसरी ओर जैन विश्व भारती परिसर की सुविधाओं में भी अभिवृद्धि हुई है।

नवनिर्मित स्वागत कक्ष

नवीनीकृत भोजनशाला

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

विश्वविद्यालय के उल्लेखनीय शोधार्थी

तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट संस्था जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय जैन विद्या के विकास के लिए निरन्तर गतिशील है। प्राच्य विद्याओं के अध्ययन, अनुसंधान एवं शोध के साथ अहिंसा, शांति, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के लिए स्थापित जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय एक अनोखे विश्वविद्यालय के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। यह गौरव का विषय है कि इस विश्वविद्यालय में अध्ययन और शोध के लिए अनेक विशिष्ट व्यक्तियों का समय-समय पर आगमन होता रहा है, जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण शासकीय, पेशेवर, व्यावसायपरक तथा प्रशासनिक कर्तव्यों के निर्वाह में इस अध्ययन का लाभ उठाकर अपने कार्यक्षेत्र में उनका प्रयोग किया है तथा देश, समाज और मानवता को अपनी विशिष्ट सेवाएँ दी हैं। ऐसे ही दो उल्लेखनीय शोधार्थी इस समय विश्वविद्यालय में शोधरत रहते हुए संस्थान की गौरववृद्धि कर रहे हैं।

श्री मनोज भट्ट
अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक,
आयोजना एवं कल्याण विभाग, जयपुर
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान एवं योग विभाग में शोधार्थी।

शोध विषय – Effect of Preksha Meditation on Adjustment Problem and Death **Anxiety** in elderly Persons.

श्री भंवरसिंह भदाला
अतिरिक्त सिविल न्यायाधीश (व.ख.) एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, न. 2, अजमेर गिला
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान एवं योग विभाग में शोधार्थी।

शोध विषय – Impact of Preksha Meditation on Decision Making Ability, Job Satisfaction and Stress of Judicial Officers.

दोनों शोधार्थियों को मातृ संस्था जैन विश्व भारती की ओर से अनेकानेक मंगलकामनाएं।

जीवनोपयोगी शिक्षा के लिए एक नई पहल

इंग्लिश समर कोर्स का आयोजन

ग्रामीण बालक-बालिकाओं, नवयुवकों-नवयुवतियों, गृहिणियों आदि को अंग्रेजी भाषा में प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर (एम.आई.एस.) में दिनांक 01 जून, 2011 से लेकर 30 जून, 2011 की अवधि तक 6 इंग्लिश समर कोर्स के आयोजन किए गए।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं द्वारा प्रायोजित एवं महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर द्वारा आयोजित इंग्लिश समर कोर्स में टमकोर एवं आस-पास के 20 गांवों के 275 व्यक्तियों ने भाग लिया। सहभागियों को आरम्भिक (बिगिनर्स), प्राथमिक (प्राइमरी) एवं उच्चतर माध्यमिक (इंटरमीडिएट) तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया था। प्रशिक्षकों ने सहभागियों को अंग्रेजी व्याकरण, संभाषण एवं लेखन की उपयोगी शिक्षा प्रदान की। प्रतिभागियों ने माना कि उन्हें इस कार्यक्रम से बहुत लाभ हुआ है।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

जैन विश्व भारती प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर, ह्यूस्टन (यु.एस.ए.)

ह्यूस्टन प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर का मुख्य द्वार

आचार्य महाप्रज्ञ की अभिप्रेरणा से जैन विश्व भारती ने विश्व मानचित्र पर अपनी पहली उपस्थिति 11 दिसम्बर, 1999 को ह्यूस्टन में दर्ज की जब समणी मधुरप्रज्ञा एवं समणी अक्षयप्रज्ञा के सान्निध्य में ह्यूस्टन में जैन विश्व भारती प्रेक्षा सेंटर की शुरुआत हुई। ह्यूस्टन के समर्पित श्रावक भाई सुनील मेहता एवं उनकी पत्नी श्रीमती रीटा मेहता के सहयोग से इस सेन्टर में तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना का कार्य प्रारम्भ हुआ जो अनवरत गतिशील है। लगभग एक दशक बाद सन् 2009 में ह्यूस्टन के उदारमना श्रावकों के सहयोग से जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेन्टर ने समणी अक्षयप्रज्ञा एवं समणी विनयप्रज्ञा के सान्निध्य में एक नया स्वरूप और आकार ग्रहण किया।

लगभग 2 एकड़ भूमि पर 11600 स्क्वायर फुट में नवीन भवन का निर्माण हुआ, जिसका नाम रखा गया - "जैन विश्व भारती प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर, 'ह्यूस्टन'। ह्यूस्टन के मुख्य हाइवे न. 65 पर लगभग 2 मिलियन डॉलर (भारतीय मुद्रा लगभग 10 करोड़ रुपये) की लागत से बना यह सेंटर अपने आपमें कई विशेषताएं समेटे हुए है।

ह्यूस्टन सेंटर स्थित पिरामिडनुमा ध्यान कक्ष

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

इस सेंटर के सामने के भाग में प्रशासनिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है। उसके एक तरफ समणीवृंद के प्रवास हेतु दो कमरों का एक ब्लॉक है तथा दूसरी तरफ रसोईघर एवं भोजनशाला है, जहां 50 से 70 व्यक्तियों के लिए एक साथ भोजन करने की व्यवस्था है। पास में ही 'उपासना-कक्ष' का निर्माण किया गया है, जहां भगवान महावीर की प्रतिमा स्थापित की गई है। उपासना की दृष्टि से इस कक्ष का विशेष महत्व है। उपासना कक्ष के निकट एक पुस्तकालय है जो अध्येताओं एवं शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। ज्ञानशाला हेतु चार कक्षों का निर्माण किया गया है, जिनके नाम क्रमशः ***ज्ञान कक्ष***, ***दर्शन कक्ष***, ***चारित्र कक्ष*** एवं ***तप कक्ष*** रखे गए हैं।

जैन विश्व भारती ह्यूस्टन सेन्टर का मुख्य भाग ध्यान कक्ष (मेडिटेशन हॉल) है। पिरामिड के रूप में बना यह ध्यान कक्ष अत्यंत आकर्षक एवं नयनाभिराम है। इस हॉल के सेंटर प्वायंट (पिरामिड) की ऊँचाई लगभग 51 मीटर है, जिसे इस सेंटर का केंद्रीय भाग कहा जा सकता है। ध्यान और साधना के लिए यह कक्ष सर्वथा अनुकूल और साताकारी है। इस ध्यान कक्ष से मानो ध्यान के प्रयोगों की तरंगें निरन्तर प्रवाहित होती रहती हैं। सभी आवश्यक सुविधाओं से संपन्न इस हॉल में लगभग 350 व्यक्ति एक साथ बैठकर ध्यान कर सकते हैं। जन-जन के आकर्षण का केन्द्र बना यह कक्ष ध्यानार्थियों में ध्यान से होने वाली आंतरिक अनुभूतियों का साक्षात्कार कराता है तथा गहन ध्यान के प्रति नए उत्साह, उमंग और प्रेरणा का संचार करता है।

स्थापनाकाल से लेकर अब तक इस सेंटर में प्रेक्षाध्यान और प्रेक्षायोग का प्रयोग नियमित करवाया जाता है, जिससे जैन एवं जैनेतर सभी सम्प्रदायों के लोग लाभान्वित हो रहे हैं। यहाँ जैन दर्शन, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत, अहिंसा आदि की कक्षाएं भी नियमित रूप से संचालित होती हैं। इसके साथ ही ज्ञानशाला, पारिवारिक संगोष्ठियां तथा सभी आयु-वर्ग के लोगों के लिए विभिन्न विषयों पर कार्यशालाएँ, शिविर आदि भी समय-समय पर संचालित किए जाते हैं।

प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से अनेक लोगों ने शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य तो प्राप्त किया ही है साथ ही अपनी दैनंदिन समस्याओं का समाधान भी प्राप्त किया है।

वर्तमान में समणी निर्देशिका अक्षयप्रज्ञाजी एवं समणी परिमलप्रज्ञाजी के कुशल निर्देशन में यह सेन्टर विदेश में तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना में उत्तरोत्तर गतिशील है। समणीवृंद के सान्निध्य में यहां जैनत्व के संस्कार दिन-प्रतिदिन पुष्ट हो रहे हैं और विश्व पटल पर तेरापंथ तथा जैन विश्व भारती के पदचिह्न परिपुष्टता के साथ अंकित हो रहे हैं।

प्रवासित समणी वृंद एवं स्थानीय जैन समुदाय

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

विदेश के केन्द्रों की गति-प्रगति

समणी अक्षयप्रज्ञाजी एवं समणी परिमलप्रज्ञाजी के निर्देशन में जैन विश्व भारती प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर की विभिन्न गतिविधियाँ दिन-प्रतिदिन प्रगतिशील हैं। यहाँ समय-समय पर संघ प्रभावक कार्यक्रम होते रहते हैं। हाल ही में आयोजित कुछ गतिविधियों के विवरण नीचे दिए जा रहे हैं :

ह्यूस्टन में 'अपने चिंतन को बदलें' विषय पर त्रिदिवसीय शिविर

जैन विश्व भारती प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर ने त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन किया, जो ह्यूस्टन से दूर वेलविले के स्वच्छ, शांत व शुद्ध प्राकृतिक वातावरण में आचार्य महाश्रमण की सुशिष्या समणी अक्षयप्रज्ञाजी और समणी परिमलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में सानंद सम्पन्न हुआ। इस शिविर में लगभग 70 शिविरार्थियों और बच्चों ने भाग लिया। इस शिविर का विषय था - 'अपने चिंतन को बदलें : अपने जीवन को बदलें' (Change Your Thinking Change Your Life)। इस शिखर के प्रतिभागी ऑस्टिन, सैन एंटिनो, पैलेस्टाइन एवं ल्यूसियाना आदि क्षेत्रों के थे। प्रतिदिन कार्यक्रम की शुरुआत भक्तामर स्तोत्र के संगान, ध्यान, आसन और प्राणायाम से हुई, जो प्रतिभागियों में नूतन ऊर्जा का संचार करने वाली थी। इनके अतिरिक्त विविध विषयों, यथा 'कैसे

उत्साहित रहें' (How to Stay Enthusiastic) 'आनन्दमय जीवन का सूत्र' (The Formula of Cheerful Life), 'अपने विचारों को देखें' (Observe Your Thoughts), जीवन अमृत The Elixir of life' पर समणीजी ने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। तनाव मुक्ति के लिए कायोत्सर्ग एवं हृदय की अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाया गया। शाम के समय श्वास-प्रेक्षा के साथ गमन योग करते समय लोगों ने भावक्रिया का सुखद अनुभव किया। शारीरिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए डॉ. मनीष मेहता ने 'उच्च रक्तचाप और हृदय-रोग' (High Blood Pressure and Heart Problem) पर अपने विचार रखे। शिविरार्थियों ने अनुभव किया कि संयमित जीवन शैली, ध्यान, प्राणायाम, आसन आदि स्वस्थ एवं प्रसन्न जीवन के अनिवार्य अंग हैं। इसके साथ ही बच्चों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। "एक शाम शिविरार्थियों के नाम" कार्यक्रम के अंतर्गत सम्भागी भाई-बहनों ने अपने-अपने ग्रुप के माध्यम से उक्त विषयों पर रचनात्मक एवं रोचक प्रस्तुति देकर सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

डलास शहर में महावीर जयंती का आयोजन

डलास शहर में महावीर जयंती का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर समणी अक्षयप्रज्ञाजी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि संग्रह की अपेक्षा त्याग का महत्व ज्यादा है। किसी भी चीज की प्राप्ति के लिए पहले छोड़ना पड़ता है तभी किसी चीज को प्राप्त किया जा सकता है। सिनेमा देखने जाएंगे तो टिकिट प्रवेश द्वार पर छोड़ेंगे तभी अन्दर प्रवेश कर पाएंगे। भगवान महावीर वन्दनीय इसलिए बने कि उन्होंने त्याग किया, छोड़ा। समणी परिमलप्रज्ञाजी ने कहा कि हम भगवान महावीर के जन्म दिवस को प्रतिवर्ष इसलिए मनाते हैं कि यह हमारा प्रभु के प्रति सम्मान तो है ही साथ ही सुंदर, सार्थक और श्रेष्ठ मानव जीवन जीने की अभिप्रेरणा भी देता है। महावीर के सिद्धांतों को अपनाकर ही हम जीवन का सच्चा आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। समणीजी ने जागरूकता के साथ जीवन जीने की प्रेरणा दी।

विश्व पटल पर जैन विश्व भारती

"अहिंसा का पथ' अपनाने पर कार्यक्रम

आचार्यश्री महाश्रमण के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 'अहिंसा का पथ' (पाथ ऑफ अहिंसा) नामक कार्यक्रम जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेंटर में आयोजित किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों ने "Don't Use Me" नामक एक छोटी-सी प्रस्तुति के द्वारा जनता से आह्वान किया कि नशा करने से क्या नुकसान होते हैं और क्या फायदे? छोटे-छोटे बच्चों ने कार्यक्रम के द्वारा आचार्यप्रवर के नशा मुक्ति आन्दोलन की जानकारी दी। बड़े लोगों द्वारा एक संवाद "योगात्मक युग में इक्कीसवीं सदी का व्यक्ति" का आयोजन किया गया। आधुनिक शैली एवं रोचक ढंग से प्रस्तुति देते हुए कलाकारों ने बताया कि समय बदलने के साथ किस प्रकार आवश्यकताएँ एवं व्यवस्थाएँ बदलती हैं। श्रव्य एवं दृश्य माध्यम से प्रस्तुत इस कार्यक्रम ने लोगों को विशेष रूप से प्रभावित किया।

समणी परिमलप्रज्ञाजी ने "महापुरुषों की स्तुति, स्मृति क्यों करते हैं" इस विषय पर अपने विचार रखें एवं आचार्य श्री महाश्रमण की सत्य-निष्ठा एवं गुरु के प्रति समर्पण भाव की उत्कृष्टता की अवगति जनता को दी।

समणी अक्षयप्रज्ञाजी ने गुरु की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गुरु जलते हुए दीपक के समान है। जलता हुआ दीपक ही बुझे हुए प्राणियों में प्राणवत्ता का संचार कर सकता है। जो स्वयं तैरना जानता है वही दूसरों को तार सकता है। भूखा दूसरों की भूख नहीं मिटा सकता। माँ बाप जन्म देते हैं लेकिन गुरु जीवन देते हैं। कार्यक्रम का कुशल संचालन जैन विश्व भारती, ह्यूस्टन के अध्यक्ष श्री प्रमोद बैंगानी ने किया।

लंदन में कार्यक्रम

समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी एवं समणी विकासप्रज्ञाजी के सानिध्य में लंदन में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें ज्ञानशाला के बच्चों के लिए व्यक्तित्व विकास की कार्यशाला, महिलाओं के विकास हेतु प्रेक्षाध्यान की कक्षाएं आदि प्रमुख हैं।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

समणी प्रसन्नप्रज्ञा एवं समणी विकासप्रज्ञाजी के सानिध्य में बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें लगभग बीस बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में समणीवृंद के साथ पूजा, सागर एवं नताशा ने बच्चों को योग और ध्यान के प्रयोग रोचक तरीके से करवाए और बच्चों के फीडबैक लिए। प्रसन्नप्रज्ञाजी ने संभागी बच्चों को 'क्रोध' विषय पर कहानी के द्वारा बताया कि क्रोध हमारे जीवन के लिए बहुत हानिकारक हैं और छोटे-छोटे प्रयोगों से हम इस पर नियंत्रण पा सकते हैं।

लंदन में प्रवासित समणीवृंद के सानिध्य में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

पर्यावरण दिवस पर विशेष आलेख

पर्यावरण और प्रदूषण

आचार्य महाप्रज्ञ

पर्यावरण और प्रदूषण का संकट आज एक खतरनाक बिंदु पर पहुँच गया है जहाँ विकास की सारी यात्राओं पर प्रश्नचिह्न खड़ा हो गया है। दुनिया का एक निश्चित संतुलन है। सारी प्रकृति तालबद्ध तरीके से चल रही है। परंतु कुछ लोग मानते हैं कि इस गतिमयता के पीछे ईश्वर का साथ है। वही सृष्टि की सर्जना करता है, वही इसका पोषण करता है और वही इसका विनाश करता है। पर जैन दर्शन ऐसी किसी ईश्वर शक्ति में विश्वास नहीं करता। उसके अनुसार तो सब कुछ अपने प्राकृतिक नियमों के अनुसार हो रहा है। फिर भी मनुष्य एक ऐसा प्राणी हो जो इस प्राकृतिक व्यवस्था को लांघकर अपने असंयम से या वैज्ञानिक प्रगति के नाम पर कुछ ऐसा प्रयत्न कर रहा है जिससे इस सहज संतुलन के बिगड़ने का खतरा पैदा हो रहा है।

पर्यावरण के प्रदूषण के मूल में एक कारण मनुष्य की यह धारणा है कि सब पदार्थ मनुष्य के उपभोग के लिए बने हैं, अतः उनका भरपूर उपभोग किया जाए। इस आधार पर उपभोक्ता संस्कृति का निर्माण हुआ। आज उपभोक्ता संस्कृति इतनी व्यापक बन गई है कि मनुष्य चाहे जैसे उसका उपभोग कर सकता है। इस उपभोक्तावादी संस्कृति का परिणाम यह हुआ कि मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करना शुरू कर दिया। प्राकृतिक संसाधन समाप्त किए जा रहे हैं, अनगिनत पशु-पक्षी मारे जा रहे हैं। और यदि यही क्रम अनवरत चलता रहा तो एक दिन पृथ्वी हमारे लिए उपयोगी नहीं रहेगी, प्राणी मात्र के लिए रहने लायक नहीं रहेगी, भयंकर बन जाएगी। अतः आज लगभग दुनिया के हर कोने में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आंदोलन चल रहे हैं। और हमें इस पर गंभीरता से सोचना होगा।

भगवान महावीर ने कहा था कि पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति – इन सबकी स्वतंत्र सत्ता है। ये किसी के लिए नहीं बने हैं, मनुष्य के खाने के लिए नहीं बने हैं। यह सच्चाई समझ में आ जाए तो इन सबके प्रति इतना अतिक्रमण और अत्याचार नहीं हो सकता। आज बहुत अतिक्रमण होता है। मनुष्य चाहे जैसे उनके साथ व्यवहार करता है। क्या मनुष्य ने कभी ध्यान दिया कि आवश्यकता से ज्यादा वनस्पति को नहीं काटना चाहिए? आवश्यक काम के लिए नीम की पत्तियाँ तोड़नी हैं तो पूरी शाखा क्यों तोड़ें? नल को खोलकर घंटों तक अनावश्यक पानी क्यों बहा देते हैं? क्या यह अतिक्रमण नहीं है। यदि ये प्रश्न मनुष्य के मस्तिष्क में उभरने लगें तो क्या पर्यावरण की समस्या के समाधान की दिशा में प्रस्थान न हो जाए?

जैन धर्म के अनुसार अहिंसा एक मुख्य आचार है। उसका आध्यात्मिक मूल्य तो है ही पर आज विज्ञान ने भी इस सिद्धांत पर उपयोगिता की मुहर लगा दी है। आज अहिंसा का अर्थ केवल पारलौकिक ही नहीं रह गया है, अपितु प्रत्यक्ष जीवन के साथ भी उसका गहरा अर्थ समझ में आने लगा है। जैन धर्म जीवन का अस्तित्व केवल आदमियों, पशुओं या कीड़ों-मकोड़ों में ही नहीं मानता अपितु पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा तथा वनस्पति – इन पंचभूतों में भी उसका अस्तित्व स्वीकार करता है। इसलिए स्थिर रहने वाले सूक्ष्म जीव की हिंसा से बचने के लिए जैन धर्म ने गहरा विचार किया है। जैन आगम ग्रंथों में पृथ्वीकाय, अपकाय आदि पांच स्थावर जीवों के बारे में बहुत विस्तार से वर्णन किया गया है। ये जीव किस तरह आहार ग्रहण करते हैं, किस तरह श्वासोच्छ्वास लेते हैं, उनके पास कैसा शरीर है, कितनी इंद्रियाँ हैं, उनमें कितने प्राण हैं आदि प्रश्नों पर बहुत गहराई से विचार किया गया है।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

आज विज्ञान भी पृथ्वी आदि भूतों के बारे में जिस दृष्टि से विचार करने लगा है उससे अहिंसा की मान्यता को एक नया आयाम मिला है। धर्म जहाँ प्राणविनाश की दृष्टि से अहिंसा पर विचार करता है वहां विज्ञान उस पर प्रदूषण की दृष्टि से विचार कर रहा है। वायु, पानी, मिट्टी, पौधे, पेड़ और जानवर सभी मिलकर पर्यावरण अथवा वातावरण की रचना करते हैं। ये सभी घटक पारस्परिक संतुलन बनाए रखने के लिए एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, जिसे परिस्थिति-विज्ञान संबंधी संतुलन कहते हैं। जब विकास के नाम पर प्रकृति का उपयोग एक सीमा से अधिक किया जाता है तो हमारे पर्यावरण में परिवर्तन होता है। अगर इन परिवर्तनों की प्रक्रिया का सामंजस्य प्रकृति के साथ नहीं किया जाता है और परिस्थिति विज्ञान संबंधी संतुलन को बनाए नहीं रखा जाता है तो उससे ऐसा असंतुलन पैदा हो सकता है कि पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन खतरे में पड़ सकता है। यही असंतुलन प्रदूषण पैदा करता है। आज अनेक प्रकार के खनिज पदार्थों के लिए, खासकर पत्थर के कोयले के लिए पृथ्वी का जबरदस्त दोहन किया जा रहा है। यदि इसी प्रकार खनिज पदार्थों का उपयोग किया गया तो कुछ ही वर्षों में उसके भंडार निःशेष हो जाएँगे। दुनिया में जब से औद्योगीकरण की लहर आई है तब से ही पत्थर के कोयले के जलने से उसकी धूल, कार्बनडॉक्साइड, सल्फरडॉक्साइड तथा कुछ आर्गेनिक गैसों के रूप में प्रदूषणकारी पदार्थों की भरमार हो गई है। बड़े शहरों तथा कारखानों के आसपास इसका प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगा है।

पृथ्वीकाय की हिंसा केवल पृथ्वीकाय की हिंसा ही नहीं है, अपितु उसके साथ वातावरण का संतुलन भी गहरे अर्थ में प्रभावित होता है। पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि तथा पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा तथा वनस्पति के स्थावर जीवों के साथ एकता साधना ही अहिंसा की समुपासना है। विश्व में जो कुछ है उसे उसी तरह रहने देना, उसके साथ छेड़-छाड़ न करना अहिंसा है। विश्व की संरचना एक ऐसा परस्पराधारित तानाबाना है कि एक तार को छूने से पूरा ब्रह्मांड झनझना उठता है। ऐसी स्थिति में एक का वध करने से दूसरा जीव-वंश स्वयं ही नष्ट हो जाता है। संसार में पाई जाने वाली समस्त जीवित तथा अजीवित वस्तुएँ आपस में उसी प्रकार जुड़ी हुई हैं जिस प्रकार माला के मोती। पर्यावरण की दृष्टि से पृथ्वी के ऊपर की मिट्टी की परत बहुत कीमती है। एक-एक कण के जमने से इस परत का निर्माण होता है। मनुष्य के एक ही झटके से वह परत इतनी क्षतिग्रस्त हो जाती है जिसकी पूर्ति लाखों वर्षों के बाद ही संभव हो सकती है।

कई जगह पहाड़ों के उत्खनन से पानी का प्रवाह इतना विपर्यस्त हो जाता है कि बहुत सारी कीमती जमीन को नदियाँ लील जाती हैं। उससे जो प्राकृतिक विनाश हो जाता है उसे आंकना बहुत मुश्किल है। दूसरी ओर, पानी भी सजीव तत्व है। एक तो वह स्वयं सजीव तत्व है, उसमें अपकाय के स्थावर जीव पाए जाते हैं, तथा दूसरे उसके आश्रय में वनस्पतिकाय के स्थावर तथा त्रसकाय के द्वीन्द्रिय आदि जीव पलते हैं। जल-प्रदूषण से अपकाय की हिंसा तो होती ही है, साथ ही वनस्पति द्वीन्द्रिय प्राणी, मछलियाँ, यहाँ तक कि उसका प्रदूषण मनुष्य को भी प्रभावित करता है। यों देखा जाए तो वायु के बाद मनुष्य के लिए पानी की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। इसके बावजूद पानी में मनुष्य का मल फेंक दिया जाता है। इससे पानी में भयंकर प्रदूषण पैदा होता है।

प्रत्येक प्राणी के लिए प्राणवायु अत्यंत अनिवार्य है। हमारी पृथ्वी पर 50 से 70 प्रतिशत प्राणवायु का उत्पादन पानी में पैदा होने वाली सूक्ष्म वनस्पति फायटोप्लेंक्शन से होता है। वह सूर्य से प्रकाश-संश्लेषण कर पानी में हाइड्रोजन और आक्सीजन को विभक्त करती है। इस प्रकार पानी हमारी दुनिया के जीवन का एक मुख्य स्रोत है। पर आज उसमें भयंकर प्रदूषण पैदा हो रहा है। कारखानों में पानी का भारी मात्रा में प्रयोग होता है। जब वह पानी रासायनिक क्रियाओं से गुजरकर बाहर आता है तो इतना प्रदूषित हो जाता है कि मनुष्यों के लिए क्या, जानवरों तक के भी पीने लायक नहीं रह जाता है। खासकर तालाबों और नदियों में इसका प्रभाव अधिक पड़ता है।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

औद्योगिक विकास के साथ ज्यों-ज्यों शहर बढ़ते हैं त्यों-त्यों प्रदूषण भी बढ़ता गया। मशीनीकरण जल तथा हवा के प्रदूषण का मुख्य अंग है। भिन्न-भिन्न प्रकार की भट्ठियों में प्रयोग आने वाले पानी के वाष्प तथा धुएँ से हवा में बहुत बड़ा प्रदूषण होता है तथा नदियों और तालाबों का पानी प्रदूषित हो जाता है। यांत्रिक युग का यह अभिशाप धीरे-धीरे सारे संसार में फैलता जा रहा है। इससे मानवीय अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है। विकसित देश तो उससे लड़ने के लिए कुछ साधन भी जुटा सकते हैं, पर विकासशील देशों के पास वह उपाय भी नहीं है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि प्रदूषण की यही गति रही तो एक दिन समुद्र भी प्रदूषित हो जाएँगे, क्योंकि पानी का प्रदूषण चाहे तालाब में हो, चाहे नदी में, अंततः वह समुद्र में ही मिलने वाला है तथा वह प्रदूषण मनुष्य को ही प्रभावित करने वाला है, क्योंकि एक ओर उससे प्राणवायु के उत्पादन का संतुलन बिगड़ जाएगा तो दूसरी ओर जल जीवों में संगृहीत विषाणु भिन्न-भिन्न रूपों में फिर मनुष्य तक पहुँच जाएँगे।

वायु का प्रदूषण आज के युग की एक ज्वलंत समस्या है। वातावरण हमारे परिसर का एक प्रमुख अंग है। उचित परिमाण में मिली हुई हवा का यह आवरण हमारी पृथ्वी को लपेटे हुए नहीं होता तो इसकी भी वही स्थिति होती जो आज अन्य ग्रहों की है। ओजोन परत के किसी भी रूप में दुर्घटनाग्रस्त होने से पृथ्वी पर जीवधारियों का जीवन ही खतरे में पड़ जाएगा। पृथ्वी पर ऑक्सीजन का स्रोत ओजोन ही है। साथ ही पृथ्वी पर सूर्य को प्रकाश से पराबैंगनी विकिरणों को रोकने का अथवा सोखने का काम भी यह परत करती है। यदि ये विकिरण पृथ्वी पर सीधे पहुँच जाएँ तो त्वचा का कैंसर, आँखों के रोग आदि हो सकते हैं। वातावरण की शुद्ध हवा ने यहाँ प्राणियों को जीवन का आधार प्रदान कर रखा है। पर मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधाओं के लिए तीव्रता से उसे दूषित करना शुरू कर दिया है।

उद्योग धंधों के अमर्यादित विस्तार तथा यातायात के द्रुत साधनों के विकास के कारण जो कचरा तथा अनावश्यक पदार्थ जल, स्थल तथा हवा में छोड़े जाते हैं, उनसे सारा वातावरण प्रदूषित होता जा रहा है। यदि इस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो थोड़े दशकों के पश्चात ही इस ग्रह पर मानवजाति के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो जाएगा। यदि औद्योगिक इकाइयों में कोयले का जलाया जाना वर्तमान ढंग से जारी रहा और उचित प्रदूषण नियंत्रण उपाय नहीं अपनाए गए तो भारत में दस वर्ष में तेजाबी वर्षा होने लगेगी। वायुमंडल में जो कुछ प्रदूषण होता है उसमें से कुछ अंश बरसात के माध्यम से जमीन पर नदी-नालों में भी पहुँच जाता है। जमीन व पानी में प्रदूषण का एक नया एवं खतरनाक चक्र प्रारंभ हो जाता है। कुछ पेड़-पौधे, अनाज जैसे गेहूँ, चावल आदि प्रदूषित जमीन से विषैले तत्व, धातु आदि आत्मसात कर लेते हैं जो भोजन के रूप में आदमी के शरीर में पहुँच जाते हैं।

ध्वनि प्रदूषण भी आज के समय की बड़ी समस्या है। शब्द की शक्ति भी अपरिमेय होती है। शब्द या ध्वनि मनुष्य के लिए घातक भी हो सकती है। विस्फोटक ध्वनि से बड़े-बड़े पत्थरों को तोड़ा जा सकता है, तब बेचारे कान के कोमल पर्दों की तो बात ही क्या है? यातायात की खड़खड़ाहट, विमानों का कर्णभेदी स्वर, कल-कारखानों तथा तरह-तरह की मशीनों की निरंतर धड़धड़ाहट, वातानुकूलित यंत्र तथा पंखे-रेफ्रिजेरेटर का सूक्ष्म कंपन, रेडियो से कोलाहल, घर के बर्तन आदि वस्तुओं का संघर्षण, परस्पर का वार्तालाप, स्कूल-कॉलेज, ऑफिस, सभा-सोसाइटियों, जुलूसों का गगनभेदी घोष, भिन्न-भिन्न प्रकार के वाद्य-यंत्र आदि न जाने कितने प्रकार की आवाजें हर क्षण कानों पर आक्रमण करती रहती हैं। यद्यपि प्राचीन काल में भी ध्वनि न थी ऐसा तो नहीं था पर शहरों में घनी आबादी तथा कल-कारखानों के बढ़ जाने से आज समस्या गंभीर हो गई है। इस पर नियंत्रण नहीं हुआ तो बहरापन एक व्यापक रोग बन जाएगा। असह्य ध्वनि का प्रभाव केवल कानों पर ही नहीं होता, अपितु सारे शरीर पर पड़ता है। श्वसन-प्रणाली, पाचन-प्रणाली, जनन-प्रणाली तथा मज्जा संस्थान पर

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

भी इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। इतना ही नहीं, मस्तिष्क तथा स्नायुओं, खासकर हाथ पैरों की नाजुक रक्त वाहिनियों पर तो इसका और भी अधिक प्रभाव पड़ता है। आँखों में घाव, सिरदर्द आदि बीमारियाँ भी इससे अस्तित्व में आ सकती हैं। ध्वनि का सबसे अनिष्टकारी प्रभाव तो कदाचित मज्जा संस्थान पर होता है। इससे निद्रानाश, चिड़चिड़ापन, नैराश्य आदि के रूप में मानसिक स्वास्थ्य चौपट हो जाता है, जिसका अंतिम परिणाम आत्महत्या तक हो सकता है। गर्भस्थ शिशुओं पर भी ध्वनि का तीव्र प्रभाव होता है।

महावीर द्वारा संयम पर बल देने का कारण अत्यंत वैज्ञानिक है। उसे केवल आज की परिस्थिति के दृष्टिकोण से ही समझा जा सकता है। महावीर ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवों की अहिंसा पर भी उतना ही जोर दिया है, जितना वे मनुष्य की अहिंसा पर जोर देते हैं। इस दृष्टि से उन्होंने जीवन को पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा, वनस्पति तथा त्रस इन छह भेदों में बांटा है। यद्यपि थोड़े वर्षों पहले जीवन का यह विस्तार-विवेचन विज्ञान के लिए स्वीकार्य नहीं था, आज भी हो सकता है कुछ अंशों में इसमें मतभेद हो, पर वनस्पति के जीवन के बारे में तो बिलकुल असंदिग्धता प्रकट हो गई है। महावीर ने साधक के लिए वनस्पति की हिंसा का तीव्र विरोध किया है। इसका कारण यह नहीं था कि वे काया को संक्लेश देना चाहते थे, अपितु उनकी दृष्टि में वनस्पति के जीवों के प्रति एक बहुत गहरी संवेदना थी। आज वैज्ञानिकों में यह संवेदना अहिंसा की दृष्टि से तो नहीं उतरी है, पर प्रदूषण की दृष्टि से इस पर बहुत तीव्रता से विचार हो रहा है।

वनस्पति हमारी प्राणशक्ति का मुख्य आधार है। मनुष्य जगत और वनस्पति जगत का इतना गहरा संबंध रहा है फिर भी मनुष्य के मन में उसके प्रति करुणा का अभाव बना हुआ है। जिस वनस्पति जगत से वह इतना कुछ पा रहा है, उसके प्रति करुणा, कोमलता, सहृदयता और भाईचारा का भाव नहीं है। यह एक विडंबना है। मनुष्य और वनस्पति दोनों साथी हैं। वनस्पति के बिना मनुष्य का जीवन संभव नहीं, किंतु मनुष्य के बिना वनस्पति का जीवन संभव हो सकता है।

आदिम युग में जीवन की सारी आवश्यकताएँ कल्पवृक्ष पर निर्भर थीं। वह प्रत्येक आवश्यकता को पूरा करने वाला वृक्ष था। यौगलिक जीवों की अपेक्षाएं - भोजन, वस्त्र आदि कल्पवृक्ष से पूरी होती थीं। मकान, आभूषण, मनोरंजन के साधन, श्रृंगार, साज-सज्जा, रहन-सहन सब कुछ कल्पवृक्ष पर आश्रित था। कल्पवृक्ष के बिना यौगलिक जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। पहले कल्पवृक्ष ही उसका मकान था। यौगलिक युग के अंतिम समय में पहला मकान बना। मकान का नाम था अगार। पहला मकान लकड़ी से बना। अग वृक्ष से बना इसलिए मकान का नाम अगार हो गया। जीवन की आवश्यकताएँ बढ़ीं। मनुष्य ने कपड़े बनाने शुरू किए। उसका प्रणयन भी वनस्पति जगत से आधृत था। खाने की पूर्ति का स्रोत भी वनस्पति जगत था। जीवन के विकास क्रम में व्यक्ति की निर्भरता वनस्पति जगत पर हो गई। प्रवृत्ति का विस्तार होता चला गया। मकान और वस्त्र बनने लगे, फसलें उगने लगीं। जीवन का नया दौर शुरू हो गया, किंतु सब कुछ वनस्पति जगत पर निर्भर बना रहा। आज प्रकृति का जिस तरह दोहन हो रहा है वह भविष्य के लिए संकट का कारण बन सकता है।

अधिक पैदावार के लिए रासायनिक खादों का प्रयोग आज आम बात हो गई है। किसान अनजाने ही खेतों की मिट्टी को एक खतरनाक स्थिति में डाल रहे हैं, क्योंकि रासायनिक खादों से फसल तथा पर्यावरण को बहुत खतरा पैदा हो रहा है। उनसे एक बार तो अन्न के उत्पादन में वृद्धि होती है पर धीरे-धीरे वे नुकसानदेह साबित हो जाएंगे।

दूसरी ओर कीटनाशक दवाओं का प्रयोग भी निरंतर बढ़ रहा है। इसका असर भी हमारे पर्यावरण पर पड़ रहा है। कीटनाशकों दवाओं के कारण पादपों पर रहने वाले अनेक कीट-पतंग मर रहे हैं, जो एक तरह से अनेक

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

प्राणियों के आहार थे। उनपर कीटनाशक दवाओं डालकर उन प्राणियों की भी हत्या की जा रही है। उससे प्रकृति में असंतलुन पैदा हो रहा है।

त्रस जीवों की हत्या के रूप में मांसाहार से प्रकृति का जो विनाश हो रहा है, वह भी पर्यावरण के लिए अत्यंत घातक है। अर्थशास्त्र में मुख्य प्रश्न रहता है संतुष्टि का। उसने उपभोक्तावाद को जन्म दिया। इसी से प्रकृति का अधिक से अधिक दोहन हो रहा है। अर्थशास्त्र का एक सूत्र यह है कि इच्छा को बढ़ाते जाओ, इससे उत्पादन बढ़ेगा और उतनी ही समृद्धि बढ़ेगी। किंतु इसके कारण सृष्टि का संतुलन बिगड़ रहा है। हिंसा बढ़ रही है, पर्यावरण का संतुलन विनष्ट हो रहा है। आवश्यकता की पूर्ति करना जरूरी है, किंतु कृत्रिम आवश्यकताओं को पैदा करना और उनकी पूर्ति करते चले जाना युक्तिसंगत नहीं है। यदि आवश्यकता के आधार पर चला जाता तो दुनिया के सामने पर्यावरण का संकट पैदा नहीं होता। इसीलिए *संयमः खलु जीवनम्* के रूप में अणुव्रत अपने आप पर संयम करने की सीख देता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि जैन धर्म के मूल सिद्धांतों को यथार्थ रूप में अपनाते हुए प्रकृति के प्रति अपनाई जा रही हिंसक प्रवृत्ति पर विराम लगे और जिन कारणों से प्रकृति में असंतुलन पैदा हो रहा है उसे रोका जाए। यदि ऐसा किया जाता है तो प्रदूषण की समस्या का भी समाधान सहज ही निकल सकता है।

आचार्य तुलसी उवाच :

कोई किसान एक सेठ के पास बैठा था। बात करते-करते सेठ के कान से कलम नीचे गिर पड़ी। किसान बोला - 'सेठजी आपकी छुरी नीचे गिर गई है उसे उठा लो।' सेठ झुंझलाकर बोला - 'कैसी बात कर रहे हो ? हम तो धार्मिक हैं, पानी भी बिना छना हुआ नहीं पीते फिर छुरी कैसे रख सकते हैं ?' किसान ने कलम हाथ में लेकर पूछा - 'यह क्या है ?'

सेठ ने कहा - 'यह तो लिखने की कलम है।' किसान बोला - 'हमें क्या पता कि यह कलम है, हमारे गले पर तो यही चलाई गई है।'

राजपथ की खोज, आचार्य तुलसी, पृ. 89

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

महाप्रज्ञ साहित्य संवर्धन योजना

आचार्य महाप्रज्ञ इस युग की एक ऐसी महान विभूति थे, जिनके बहुआयामी कर्तृत्व से विश्व जगत विभिन्न रूपों में लाभान्वित हुआ है। उनकी साहित्य संपदा जहां एक ओर साहित्य-जगत की अनमोल धरोहर है वहीं दूसरी ओर मानवता की विशिष्ट सेवा का हेतु भी है। अपने गहन ज्ञान, चिन्तन, मनन, मंथन और बहुश्रुतता के आधार पर आचार्य महाप्रज्ञ ने जिस बहुमूल्य साहित्य की सर्जना की है, वह कालजयी है। ऐसे मूर्धन्य साहित्यकार के 92वें जन्म दिवस के अवसर पर उनकी अभिवंदना स्वरूप जैन विश्व भारती द्वारा 'महाप्रज्ञ साहित्य संवर्धन योजना' का शुभारम्भ किया गया। इस योजना के अन्तर्गत जैन विश्व भारती द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित, चयनित 92 पुस्तकों का 5,500/- रु. मूल्य का सेट विशेष आकर्षक छूट के साथ केवल 2,100/- रु. उपलब्ध करवाया गया।

तिमाही के दौरान जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

1.	संवाद भगवान से - भाग 1	आचार्य महाश्रमण
2.	संवाद भगवान से - भाग 2	आचार्य महाश्रमण
3.	आओ हम जीना सीखें	आचार्य महाश्रमण
4.	दु:ख मुक्ति का मार्ग	आचार्य महाश्रमण
5.	क्या कहता है जैन वाङ्मय	आचार्य महाश्रमण
6.	आचार्य भिक्षु आख्यान साहित्य	आचार्य महाश्रमण
7.	तापस कन्या ऋषिदत्ता	मुनि दुलहराज
8.	पूर्वभव का अनुराग	मुनि दुलहराज
9.	उजली चादर : उजला जीवन	मुनि सुमेरमल 'सुमन'
10.	यह है जीने की कला	मुनि सुखलाल
11.	जीवन विज्ञान : एक परिचय	मुनि किशनलाल
12.	Jeevan Vigyan - Part I	Muni Kishanlal
13.	Jeevan Vigyan - Part II	Muni Kishanlal
14.	Jeevan Vigyan - Part III	Muni Kishanlal
15.	Jeevan Vigyan - Part IV	Muni Kishanlal
16.	जीवन विज्ञान - भाग 1	मुनि किशनलाल एवं शुभकरण सुराणा
17.	जीवन विज्ञान - भाग 2	मुनि किशनलाल एवं शुभकरण सुराणा
18.	जीवन विज्ञान - भाग 3	मुनि किशनलाल एवं शुभकरण सुराणा
19.	जीवन विज्ञान - भाग 4	मुनि किशनलाल एवं शुभकरण सुराणा
20.	जीवन विज्ञान - भाग 8	मुनि किशनलाल एवं शुभकरण सुराणा
21.	जीवन विज्ञान वर्णमाला	मुनि किशनलाल एवं शुभकरण सुराणा
22.	आचार्य महाश्रमण : जीवन परिचय	साध्वी सुमतिप्रभा

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में नेपाल-बिहार तेरापंथी सभा द्वारा ज्ञानाचार के अन्तर्गत सहयोग

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचाचार की आराधना के क्रम में ज्ञानाचार के अंतर्गत जैन विश्व भारती द्वारा आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा रचित साहित्य के सन्दर्भ में एक संकल्प पत्र पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में समर्पित किया गया था। इसमें आचार्यश्री महाश्रमणजी के साहित्य के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार का लक्ष्य रखा गया है। जैन विश्व भारती की इस योजना में नेपाल बिहार जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा विशेष रूप से सहयोगी बन रही है। उक्त सभा के अध्यक्ष श्री हंसराज बेताला की प्रेरणा से अब तक आचार्य महाश्रमणजी की पुस्तकों के विभिन्न संस्करणों में 25 परिवारों का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हो चुका है एवं नेपाल बिहार सभा द्वारा 50 परिवारों के सहयोग की स्वीकृति प्राप्त हुई है। सहयोगी परिवारों के नाम निम्नलिखित हैं -

01. श्री टीमकचंद हंसराज बैताला - भागलपुर
02. श्री टीकमचंद हंसराज बैताला - भागलपुर
03. श्री अरुण कुमार अशोक कुमार सेठिया - डोडवाना
04. सोहनलाल दूगड़ ट्रस्ट - बैंगलोर
05. श्री आशकरण शंचेती - विराटनगर
06. श्री महेन्द्र कुमार बाफणा - बैंगलोर
07. श्री अनुप कुमार बोथरा - फारबिसगंज
08. श्री प्रेमचंद चोरड़िया - कोलकाता
09. श्री नेमचंद चोपड़ा - गुलाबबाग
10. श्री राजप्रकाश बांठिया - अररिया आर. एस.
11. श्री कन्हैयालाल विकास कुमार बोथरा - इस्लामपुर
12. श्री लक्ष्मीपत संजयकुमार गोलछा - इस्लामपुर
13. श्री रतनलाल हंसराज सिंघी - इस्लामपुर
14. श्री हनुमानमल बच्छराज दूगड़ - इस्लामपुर
15. श्री मूलचंद जैन - दलकोला (बंगाल)
16. श्री वैभव कमलसिंह मनोत - सूरत
17. सोहनलाल दूगड़ ट्रस्ट - बैंगलोर
18. श्री अभयराज पटावरी - कटिहार
19. श्री विनोदकुमार पटावरी - कटिहार
20. श्री राजकरण दफ्तरी - किशनगंज
21. श्री हणुतमल नाहर - भट्ठाबाजार
22. श्री कन्हैयालाल कोठारी - खगड़िया
23. श्री विजयसिंह नाहर - मधुबनी भट्ठाबाजार
24. श्री रवि बोथरा - धुलाबाड़ी (नेपाल)
25. श्रीमती सरला श्रीमाल - किशनगंज

लघु कथा

एक ग्वालिन दही बिलो रही थी। हांडी में दही था। दही में झेरना डाला। एक रस्सी के आधार पर उसको टिकाया। रस्सी के दोनों छोर दोनों हाथों में लेकर वही दही बिलोने लगी। थोड़ी देर में मक्खन निकल आया और बिलोने की क्रिया सम्पन्न हो गयी।

एक दिन दही बिलोते समय उसने सोचा - मैं एक हाथ को आगे और एक हाथ को पीछे रखती हूं, यह ठीक नहीं है। या तो दोनों हाथ आगे रहें या दोनों पीछे रहें। अन्यथा गहराई समझकर ये मेरा साथ देना छोड़ देंगे। चिन्तन पुष्ट हुआ और उसकी क्रियान्विति में आगे बढ़ा हुआ हाथ पीछे नहीं लौटा। जब तक वह पीछे नहीं लौटा, पीछे वाला हाथ आगे नहीं बढ़ा। ग्वालिन की दुविधा बढ़ गयी। आखिर उसने रस्सी को बराबर कर एक रेखा पर दोनों हाथों से रस्सी के दोनों छोरों को पकड़ा। दोनों हाथ बराबर हो गए, किन्तु आगे-पीछे की गति बिना बिलोने की क्रिया रुक गयी।

इस स्थिति में उसके मन को बेचैनी बढ़ती गयी। समाधान की दिशा में उसने पाया - आगे बढ़ना भी अच्छा है और पीछे हटना भी अच्छा है। दोनों हाथ आगे बढ़ने और पीछे हटने में जब तक सहयोगी रहेंगे तब तक ही मक्खन मिल सकेगा। निरपेक्षता में दही का नवनीत भी नहीं मिल पाता, तब जीवन का नवनीत कैसे मिलेगा?

राजपथ की खोज, आचार्य तुलसी, पृ. 72

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा

जैन विश्व भारती : एक तपोभूमि

जैन विश्व भारती एक तपोभूमि है, जहां प्रारंभ से ही साधु-साध्वियों और समणियों का प्रवास होता रहा है। आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु 'जैन विश्व भारती' प्रत्येक समणी को अपने घर की अनुभूति कराती है। यह भूमि समणश्रेणी की उद्गम स्थली है, निर्माण स्थली है, जिसने हमारी कर्मजा शक्ति को उजागर किया है। इसकी हर गतिविधि के साथ समणीवृंद को अपनेपन की अनुभूति होती है। जिस अन्तस्तोष, अनिर्वचनीय आनन्द, निश्चिंतता का अनुभव जैन विश्व भारती परिसर में रहकर होता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

अब मैं पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रविष्ट हुई उस समय जैन विश्व भारती में वर्धमान ग्रन्थागार का मात्र एक हॉल बना हुआ था, शेष परिसर उजाड़ और वीरान था। तब से लेकर अब तक इस संस्था की विकास यात्रा की मैं साक्षी रही हूं। पूज्यवरों का मार्गदर्शन, समाज का सहयोग और संस्था के पदाधिकारियों की दूरदर्शिता से जैन विश्व भारती ने देश-विदेश में अपनी पहचान बनाई है। फिर भी विकास की अनेक संभावनाएं अभी शेष हैं।

जैन विश्व भारती सात संस्कारों को लेकर कार्य कर रही है, जो इसके कार्यक्षेत्र का समग्र स्वरूप है। यद्यपि सातों ही साकार अपने आपमें महत्वपूर्ण हैं किन्तु मेरी दृष्टि से संस्कार, साधना व शिक्षा का क्षेत्र विशिष्ट है। संस्कारी भावी पीढ़ी के निर्माण से ही शुभ भविष्य की संकल्पना साकार हो सकती है। समण संस्कृति संकाय, जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान की गतिविधियां इस ओर गतिशील हैं।

युग की अपेक्षा और आवश्यकता के अनुसार जैन विश्व भारती के आकार-प्रकार और कार्ययोजनाओं में संशोधन होता रहा है। पूज्यवरों के स्वप्नों को साकार करने के लिए और मनोवांछित परिणामों की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि अब तक जो गतिविधियां संचालित होती रही हैं आगे भी नवीन दृष्टिकोण के साथ जारी रहें।

जैन विद्या के कार्यक्षेत्र में संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टियों से विकास की नई संभावनाएं उजागर की जा सकती हैं। इसके लिए कुछ सशक्त प्रयास की अपेक्षा है।

शुभ परमाणुओं से निर्मित, रमणीय इस जैन विश्व भारती के परिसर का लाभ समाज अधिक से अधिक व्यक्ति ले इस हेतु प्रत्येक आयु वर्ग के लिए नियमित कार्यक्रम एवं युगानुरूप गतिविधियों का समायोजन अपेक्षित लगता है।

नैसर्गिक सौन्दर्य से परिपूर्ण इस परिसर में सुबह शाम भ्रमण करके जिस आनन्द की अनुभूति होती है वह अनिर्वचनीय है।

समण श्रेणी की निर्माण और कर्मस्थली जैन विश्व भारती के स्वर्णिम भविष्य हेतु शुभकामना।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

मैत्री और प्रेम का प्रतीक

जैन विश्व भारती का परिसर इसकी आत्मा की तरह सुन्दर है। इस तपोभूमि में बिताया गया प्रत्येक क्षण मेरे लिए अविस्मरणीय रहा है। इस परिसर में सूर्योदय आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के संदेशों को लेकर होता है। यहां का प्रेममय एवं मैत्रीपूर्ण वातावरण प्रतिक्षण महावीर के उपदेशों को चरितार्थ करता है। इस तपोभूमि में चहुंओर छायी हरियाली निरन्तर सकारात्मक चिंतन और ऊर्जा का संचरण करती है। इन सबके साथ जैन विश्व भारती के लोगों का सरल व सहयोगी स्वभाव दिल को छू लेने वाला है।

– **अर्चना जैन**, टिटिलागढ़

अध्यात्म और शांति का साकार स्वरूप

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का वरदहस्त पाने वाली भूमि जैन विश्व भारती के बारे में लिखना कठिन है। इस परिसर के प्रत्येक भाग में, चाहे वह केन्द्रीय कार्यालय हो या अतिथि गृह, भिक्षु विहार हो अथवा ग्रंथागार, हरियाले उपवन हों या वहां की शीतल हवाएं, सभी में अध्यात्म और शांति की अनुभूति होती है। यहां का आतिथ्य भाव "जिस देश में मेहमान को भगवान कहा जाता है' को साक्षात चरितार्थ करता है। कुदरती सौन्दर्य में बसे इस परिसर को देखकर लगता है कि ज्ञान के इस सागर में ऐसे डूब जाएं कि किनारा ही ना मिले।

– **मोना ठक्कर**, भावनगर

सामंजस्य और सौहार्द का सुरम्य स्थल

जैन विश्व भारती शांति की अनुभूति का एक उत्तम माध्यम है। इस अनुभूति को इस परिसर में आकर और यहां रहकर ही अनुभव किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के द्वारा व्यावहारिक ज्ञान के साथ जो आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया जाता है वह व्यवस्थित जीवन जीने में सहायक बनता है। युवा पीढ़ी को विशेषरूप से इससे जुड़कर इसका लाभ उठाना चाहिए। जैन समाज को और तेरापंथ धर्मसंघ के परिवारों को इस संस्था से जुड़कर अपने बच्चों को यहां सर्वांगीण विकास के लिए भेजना चाहिए। आज के समय में अशांति, कलह और असामंजस्य की समस्या पारिवारिक स्तर पर बढ़ रही है, उनका समाधान भी इस शांतिपूर्ण परिसर में हो सकता है।

– **सविता रुणवाल**, जयसिंगपुर

An Unique Atmosphere

We are so glad of having the opportunity in being the experience. All the campus is so comfortable with excellent securities. First of all the people of this campus and atmosphere is unique. We are very grateful for your hospitality. We learned a lot about Preksha Meditation. We take in our mind and heart here remembrance.

Puebla, Mexico

'समाज भूषण' स्व. भंवरलालजी दुगड़

जैन विश्व भारती के वर्तमान रूप और स्वरूप के मूल में अनेक श्रावकों का सहयोग और समर्पण रहा है। समर्पित श्रावकों के कर्तृत्व से जहां एक ओर सामाजिक संस्थाएं प्रगति के शिखरों पर आरूढ़ होती हैं वहीं धर्मसंघ के विकास में उनका योगदान नींव के पत्थर की भूमिका निभाता है। इस स्तम्भ में प्रस्तुत है उन महानुभावों का परिचय जिनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व जैन विश्व भारती के लिए नींव के पत्थर के रूप में साबित होता है।

जैन विश्व भारती के कल्पनाकार : 'समाज भूषण' स्व. भंवरलालजी दुगड़

सरदारशहर का दुगड़ परिवार तेरापंथ धर्मसंघ के एक लब्ध प्रतिष्ठित परिवारों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। स्व. सुमेरमलजी दुगड़ के सुपुत्र स्व. भंवरलाल दुगड़ धर्मसंघ की श्रावक श्रृंखला की विशेष कड़ी रहे हैं। स्वभाव से निश्छल, बुद्धि से प्रखर और चरित्र से पारदर्शी भंवरलालजी अत्यंत शांत स्वभावी, विवेकशील एवं निरभिमानी व्यक्ति थे। वे आयुर्वेद के मर्मज्ञ एवं नाड़ी विज्ञान के दक्ष ज्ञाता थे। एक चिकित्सक के रूप में सेवा के उद्देश्य से उन्होंने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया और सरदारशहर में 'आयुर्वेद विश्व भारती' के नाम से बृहत प्रतिष्ठान की स्थापना की, जिसमें कालान्तर में, अध्ययन, शोध तथा प्रशिक्षण आदि के कार्य होने लगे। शिक्षा और साहित्य में विशेष रुचि रखने वाले श्री दुगड़ का सरदारशहर के शैक्षिक विकास में अतुलनीय भूमिका रही है। तेरापंथ शासन के परम हितैषी एवं उसकी श्रीवृद्धि में वे जीवनपर्यन्त क्रियाशील रहे। जैन धर्म एवं दर्शन के बहुमुखी विकास और विस्तार की बृहत्काय योजना ने उनके उर्वर मस्तिष्क में आकार लिया और उसकी फलश्रुति हुई जैन विश्व भारती के रूप में। वे जैन विश्व भारती के आद्य कल्पनाकार और स्वप्नशिल्पी थे। यद्यपि विधि की विडम्बना के कारण वे अपनी कल्पना के मूर्त रूप को स्वयं नहीं देख पाए। उनके स्वप्न की परिणति के रूप में आज जैन विश्व भारती देश-विदेश में अपनी सौरभ फैला रही है। पूज्यप्रवरों ने उनकी विशिष्टताओं का मूल्यांकन कर उन्हें श्रावकोत्तम, शासनसेवी, भारतीभूषण, समाजभूषण जैसे गरिमामय संबोधनों से संबोधित किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने श्री भंवरलाल दुगड़ के जीवनवृत्त पर 'अजातशत्रु की जीवनगाथा' नामक पुस्तक की रचना की है, जो धर्मसंघ के किसी आचार्य द्वारा किसी श्रावक पर लिखी जाने वाली प्रथम पुस्तक है। ऐसे दुर्लभ व्यक्तित्व के धनी स्व. भंवरलालजी दुगड़ के प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से हार्दिक कृतज्ञता एवं आंतरिक नमन!

श्री मांगीलाल सेठिया "समाजभूषण" सम्मान से अलंकृत

तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ एवं अग्रणी श्रावक, जैन विश्व भारती के परामर्शक मण्डल के सदस्य श्री मांगीलाल सेठिया का नाम तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वोच्च सम्मान "समाजभूषण" के लिए अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा घोषित किया गया। श्री मांगीलाल सेठिया धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ तथा सेवाभावी श्रावक हैं और उनका स्वभाव सरल तथा निश्छल है। वे प्रखर बुद्धि से संपन्न हैं, जिनके उर्वर और तलस्पर्शी चिंतन से अनेक शीर्षस्थ संघीय संस्थाओं को विकास की दिशा मिली है। उनका कुशल मार्गदर्शन और चिंतन धर्मसंघ को मिल रहा है। यह अत्यंत आह्लादक है कि महासभा ने "समाजभूषण के लिए एक ऐसे व्यक्ति का चयन किया है जो वास्तव में 'समाज का भूषण' है। जैन विश्व भारती परिवार की ओर से श्री मांगीलाल सेठिया को "समाजभूषण" से अलंकृत होने पर हार्दिक बधाई एवं मंगलकामना।

बधाई।

हर्षवर्धन मिश्रा

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के लेखाकार श्री शंकर मिश्रा के पुत्र **हर्षवर्धन मिश्रा** ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड 2011 की परीक्षा में 96% प्रतिशत अंक प्राप्त कर राज्य स्तर पर छठा स्थान एवं चूरू जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। सुजानगढ़ के रामगोपाल गाड़ोदिया आदर्श विद्या मंदिर में अध्ययनरत इस होनहार प्रतिभा को जैन विश्व भारती परिवार की ओर से हार्दिक बधाई और उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना।

ब्रजेश अग्रवाल

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड 2011 की कक्षा 12 के परीक्षा परिणामों में विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के छात्र **ब्रजेश अग्रवाल** ने पूरे भारत में 30वां स्थान हासिल कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। जैन विश्व भारती परिवार की ओर से हार्दिक बधाई और उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना।

प्रेरक कथा

समुद्रविजय के पुत्र अरिष्टनेमि की बारात शौरीपुर से चली। मथुरा के राजा उग्रसेन की पुत्री राजीमती के साथ उनका संबंध निश्चित हुआ था। बारात मथुरा पहुंची। वहां एक बाड़े में बन्दी पशु कराह रहे थे। अरिष्टनेमि ने अपने सारथी से पूछा - 'ये पशु क्यों चिल्ला रहे हैं?' सारथी बोला - 'इनका अंतिम समय निकट आ गया है। ये सब बारातियों के भोजन में काम आएंगे।' कुमार अरिष्टनेमि के कानों में मानो किसी ने सीसा डाल दिया। उनकी चेतना को झटका लगा - 'मेरे लिए इतने पशुओं की निर्मम हत्या। मुझे जीना अच्छा लगता है तो इन्हें क्यों नहीं लगेगा। इन निरीह पशुओं की आत्मा भी मेरी आत्मा जैसी ही है।' इस विचारधारा ने उनको वहां से मोड़ दिया। विवाह किए बिना ही वे लौट गए और प्रव्रजित होकर मुनि बन गए।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

समझ और समझौता

धर्मचन्द चोपड़ा
(पूर्व अध्यक्ष, जैन विश्व भारती)

स्वयं के जीवन के लिए एवं दूसरों के साथ जीने के लिए दो चीजें आवश्यक हैं – समझ (Understanding) और समझौता (Adjustement)। समझौते में शर्तें व दबाव होते हैं जबकि समझ नैसर्गिक होती है। इन्हीं दो स्थितियों से जीवन का संचालन होता है। राष्ट्र और समाज का संचालन भी होता है।

हर स्तर पर एक समझौता होता है, नीतिगत और व्यवस्थागत। बल्कि पूरे जीवन को ही समझौते का दूसरा नाम कहा गया है। अपने आसपास के लोगों के साथ, परिवारजनों के साथ, स्थितियों के साथ, विचारों के साथ, अपने जीवन साथी के साथ और यहां तक कि अपने शरीर के साथ भी जहां समझौता नहीं होता है, वहां अशांति, असंतुलन और बिखराव हो जाते हैं।

दो साथियों के बीच ऐसी समझ देखी जाती है कि जो एक सोचता है वैसा ही दूसरा सोचता है।

गुरु और शिष्य के बीच ऐसी समझ देखी कि हर समय ऐसा लगता है कि वे दो शरीर और एक आत्मा हैं।

अनेक घरों में देखा कि मूक जानवर भी अपने मालिक के साथ ऐसी समझ बना लेते हैं कि वे बिना भाषा समझे ही सबकुछ समझ जाते हैं।

समझौते के आधार पर कई बार अधिकारों को लेकर, विचारों को लेकर, नीति को लेकर फर्क आ जाता है, टकराव की स्थिति आ जाती है। समझौता मौलिक नहीं होता, कई तानों-बानों से बनता है। इसमें मिश्रण भी है, माप-तौल भी है, ऊँचाई-नीचाई भी है और प्रायः मजबूरी व दबाव भी दिखाई देते रहते हैं।

पर जहां परस्पर समझ बन गई और समझ के आधार पर ही सब संचालित हो रहा हो, वहां शांति है, प्रेम है और संतोष है। वहां कुछ भी घालमेल नहीं है। वह कई कुओं का मिश्रित क्लोराइन से शुद्ध किया गया जल नहीं, अपितु वर्षा का शुद्ध पानी है, जिसमें कीड़े नहीं पड़ते।

समझ प्राकृतिक है। समझौता मनुष्य निर्मित है। समझ निर्बाध जनपथ है। समझौता कंटीला मार्ग है, जहां प्रतिक्षण सजग रहना होता है। समझ स्वयं पैदा होती है। समझौता पैदा किया जाता है। पर जहां-कहीं समझ का वरदान प्राप्त नहीं है वहां समझौता ही एकमात्र विकल्प है। प्रजातंत्र में प्रदत्त अधिकारों की परिधि ने समझ की नैसर्गिकता को धुंधला दिया है। अतः समझौता ही संचालन शैली बन चुका है।

समझ और समझौता दोनों ही वस्त्र हैं जो हमारे जीवन रूपी शरीर को गर्मी-सर्दी से बचाते हैं। फर्क इतना ही है कि एक सूती कपड़ा है और दूसरा टेरीलिन है।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

धर्म प्रभावना का अनूठा उपक्रम : ह्यूस्टन सेंटर

बंशीलाल सुराणा, लुधियाना

कुछ समय पूर्व एक पारिवारिक आयोजन में शामिल होने के लिए मुझे मियामी, फ्लोरिडा जाने का अवसर मिला। इसी दौरान मुझे जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेन्टर से परिचित होने का मौका मिला। श्री नरेन्द्र मेहता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जीवन प्रभा मेहता, जो सेन्टर में प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रही हैं, मेरे निकट संबंधी हैं। उनके कारण मुझे सेंटर परिदर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ।

फ्लोरिडा में अपने देश, अपनी संस्कृति और अपनी सभ्यता से भिन्न इस परदेश में जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेन्टर में आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की जीवंत प्रतिमाओं को देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। इस सेन्टर में आकर ज्ञात हुआ कि यहां समणीवृंद के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान एवं योग संबंधी कार्यक्रम नियमित चलते रहते हैं एवं विशिष्ट अवसरों पर महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है, जिसमें इस प्रदेश के जैन-अजैन सभी वर्ग के लोग सहभागी बनते हैं।

यहां के कार्यकर्ताओं से ज्ञात हुआ कि समणीवृंद के सान्निध्य में आकर अनेक विदेशी लोगों ने मदिरापान जैसे दुर्व्यसनों का त्याग किया है। ऐसे उदाहरणों से जहां व्यक्तिगत जीवन संयमित एवं सुसंस्कृत बनता है, वहीं धर्मसंघ की प्रभावना भी होती है। अपनी इस यात्रा में मैंने यह अनुभव किया कि विदेशों में संचालित जैन विश्व भारती के केन्द्र तेरापंथ धर्मसंघ की वर्धापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, वहीं इन केन्द्रों पर समणीवृंद का प्रवास यहां की जन समस्याओं को शाश्वत समाधान दे रहा है।

प्रतिकूलता में अनुकूलता

सरला दूगड़ (लिपिक, समण संस्कृति संकाय)

मेरे जीवन में एक विचित्र घटना घटी जिसे सोचकर ही मन व शरीर कांपने लगता है। उस प्रसंग ने मेरे जीवन को पूरी तरह बदल दिया।

हमारा सुखद एवं संपन्न परिवार था। बरपेटा जिले के सरभोग में हमारा व्यापारिक प्रतिष्ठान था जो सफलतापूर्वक कार्य कर रहा था। समय का ऐसा विकराल दौर आया कि एक दिन हमारे यहां आतंकवादियों का हमला हो गया और उस दिन की सुबह ने मेरे जीवन में अंधकार ही अंधकार भर दिया। आतंकवादियों के उस हमले में मार-पीट, भागदौड़ और बचाव के दौरान मेरे ससुर और पति को गोली लग गई। वहां पर मौजूद व्यापारियों, श्रमिकों आदि ने हम सभी को आतंकवादियों के चुंगल से बचाने के प्रयास किए किन्तु गोलियों के डर से सभी पूरी तरह सहमे हुए थे। छोटी जगह होने के कारण पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में मेरे ससुर और पति की मौत हो गई और मेरे जीवन का हँसता-खेलता आनन्दित परिवार उजड़ गया।

कुछ समय पश्चात साध्वीश्री कंचनकुमारीजी (सुजानगढ़) का आगमन हमारे क्षेत्र में हुआ और विपरीत परिस्थितियों में मुझे और हमारे परिवार को उनका आध्यात्मिक संबल और पाथेय मिला। मैं अपने तीन बच्चों के साथ तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट केन्द्र जैन विश्व भारती पहुँच गई।

जैन विश्व भारती पहुँचने के बाद मेरे जीवन ने एक नई दिशा ली। मेरी नियुक्ति समण संस्कृति संकाय में कार्यालय सहायक के रूप में हुई और मेरे जीवन की एक दिशा निर्धारित हो गई। इसी के कारण मैंने अपने तीनों बच्चों को पढ़ाया-लिखाया और उनकी समुचित परवरिश की। परिणामतः मेरा लड़का इलेक्ट्रोनिक कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग (इ.सी.इ.), बड़ी लड़की पीएच.डी. व छोटी लड़की कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही है। प्रतिकूलता में अनुकूलता प्रदान करने वाली इस संस्था ने मेरे जीवन के अंधेरे में रोशनी का एक चिराग जलाकर हमारे परिवार को सहारा दिया। मैं जैन विश्व भारती के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

महादेवलाल गंगादेवी सरावगी फाउण्डेशन : संघ समर्पित प्रकल्प

तेरापंथ धर्मसंघ की विविध गतिविधियों एवं क्रियाकलापों के संचालन व सहयोग में धर्मसंघ की संस्थाएं तो अहर्निश प्रयत्नशील हैं ही, साथ ही अनेक व्यक्तिगत ट्रस्ट एवं संस्थाएं भी समाज सेवा के क्षेत्र में प्रयत्नशील हैं। ऐसी विशिष्ट संस्थाओं की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण नाम है - महादेवलाल गंगादेवी सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता। राजगढ़ निवासी एवं कोलकाता प्रवासी "शासनसेवी" श्री गोविन्दलाल सरावगी द्वारा अपने माता-पिता स्व. महादेवलाल गंगादेवी सरावगी की स्मृति में निर्मित यह फाउण्डेशन समाजोत्थान एवं विकास और कल्याण की दिशा में निरन्तर गतिशील है। तेरापंथ धर्मसंघ की अनेकानेक योजनाओं और गतिविधियों में इस फाउण्डेशन का उल्लेखनीय योगदान है। इस फाउण्डेशन द्वारा अनेकांत दर्शन, अहिंसा दर्शन, जैन आध्यात्मिक साहित्य एवं जैन विद्या प्रचार-प्रसार व संवर्धन हेतु जैन विश्व भारती के संचालन में चार पुरस्कार प्रायोजित किए गए हैं। ये पुरस्कार प्रतिवर्ष ऐसे व्यक्तियों अथवा संस्थाओं को प्रदान किए जाते हैं जिन्होंने क्रमशः अनेकांत दर्शन, अहिंसा दर्शन, जैन साहित्य एवं जैन विद्या के विकास और संवर्धन में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। फाउंडेशन द्वारा दिए जाने वाले सम्मान निम्नलिखित हैं :-

- **आचार्य तुलसी अनेकांत सम्मान**

  आचार्य तुलसी को समर्पित यह पुरस्कार प्रतिवर्ष अनेकांत दर्शन के प्रचार-प्रसार हेतु उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति को प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार में रु. 1,51,000/- की राशि निर्धारित है। इस संस्थान द्वारा अब तक पद्मभूषण दलसुखभाई मालवणिया, डॉ. पीटर, श्रीचंद रामपुरिया, श्रीमती सुधामही रघुनाथन, डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, प्रो. कुमारपाल देसाई, प्रो. तुषार क्रांति सरकार, डॉ. सोहनलाल गांधी, प्रो. बी. सी. लोढ़ा, श्री बजरंग जैन आदि अनेकांतधर्मियों को पुरस्कृत किया जा चुका है।

- **आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान**

  आचार्य महाप्रज्ञ के विशिष्ट अवदान 'अहिंसा प्रशिक्षण' के सिद्धान्त के व्यापक प्रचार-प्रसार और प्रशिक्षण को समर्पित इस पुरस्कार हेतु रु. 1,51,000/- की राशि निर्धारित है। प्रारंभ से लेकर अब तक यह पुरस्कार संत बालविजयजी, जगत्गुरु श्री बालगंगाधरनाथ महास्वामीजी, पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर, प्रो. एन. राधाकृष्णन, श्री बालु भाई पटेल आदि अहिंसक प्रयोक्ताओं को प्रदान किया गया है।

- **महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषी पुरस्कार**

  जैन आगमों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु समर्पित इस पुरस्कार में रु. 1,00,000/- की राशि का पुरस्कार निर्धारित है। इसके अधीन डॉ. महावीरराज गेलड़ा, डॉ. रमणीक शाह, प्रो. के. सी. सोगानी, डॉ. शशिधर शर्मा, प्रो. टी. एम. दक आदि विशिष्ट व्यक्तियों को सम्मानित किया जा चुका है।

- **गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार**

  जैन विद्या के क्षेत्र में शोध एवं अनुसंधान को समर्पित यह पुरस्कार सामान्यतः महिलाओं के लिए निर्धारित है जिसमें रु. 1,00,000/- की राशि प्रदान की जाती है। इस पुरस्कार से श्रीमती साधना कोठारी, श्रीमती मालविका मनहरलाल, श्रीमती सुनीला नाहर, श्रीमती अलका जैन, सुश्री वीणा जैन, श्रीमती लता जैन आदि महिलाएं सम्मानित हो चुकी हैं।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

प्रश्न मंच प्रतियोगिता

'कामधेनु' के इस अंक से पाठकों के लिए एक **प्रश्न मंच प्रतियोगिता** की शुरुआत की जा रही है। इस प्रतियोगिता में जैन विश्व भारती से संबंधित प्रश्नों के उत्तर प्रतिभागियों को देने हैं।

प्रतियोगिता के नियम व शर्तें

1. इस प्रतियोगिता में किसी भी आयु-वर्ग के लोग भाग ले सकते हैं।
2. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर एक से अधिक विजेता होने पर चयन लॉटरी द्वारा किया जाएगा और सभी स्थानों के लिए एक-एक व्यक्ति को पुरस्कृत किया जाएगा।
3. प्रतिभागी अपनी प्रविष्टियां डाक, फैक्स अथवा ई-मेल द्वारा जैन विश्व भारती के लाडनूं कार्यालय में भेज सकते हैं।
4. अधूरी एवं अस्पष्ट प्रविष्टियों को सम्मिलित नहीं किया जाएगा।
5. प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तारीख 15 नवम्बर 2011 है।
6. निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।
7. जैन विश्व भारती एवं इसके किसी भी विभाग में कार्यरत कर्मचारी एवं उनके परिवार जन इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेंगे।
8. प्रथम पुरस्कार **डिजिटल कैमरा**, द्वितीय पुरस्कार **मोबाईल फोन**, तृतीय पुरस्कार **आई पौड**

प्रश्नावली

प्रश्न : 1. जैन विश्व भारती के कल्पनाकार कौन व कहां के थे?

प्रश्न : 2. जैन विश्व भारती की स्थापना कब हुई एवं संविधान कब व कहां बनाया गया?

प्रश्न : 3. जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक प्रकोष्ठ 'भिक्षु विहार' को पहले किस नाम से जाना जाता था?

प्रश्न : 4. आचार्य तुलसी को जैन विश्वविद्यालय की स्थापना करने का सुझाव किसने व कब दिया था?

प्रश्न : 5. 'अजातशत्रु की जीवन गाथा' पुस्तक के रचयिता कौन हैं एवं यह पुस्तक किसको समर्पित है?

प्रश्न : 6. जैन विश्व भारती के प्रथम अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं मंत्री कौन थे?

प्रश्न : 7. जैन विश्व भारती के 'शिक्षा' प्रकल्प का प्रारंभ कब व कहां हुआ?

प्रश्न : 8. जैन विश्व भारती के शोध विभाग का दायित्व प्रथमतः किन दो विशिष्ट व्यक्तियों को सौंपा गया?

प्रश्न : 9. जैन विश्व भारती द्वारा आगम मंथन प्रतियोगिता का आयोजन कब व किस उद्देश्य से किया गया था?

प्रश्न : 10. जैन विश्व भारती को आप किस रूप में देखते हैं? अपने विचार लिखिए (अधिकतम 200 शब्दों में)

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

क्या आप जानते हैं?

1.जंगल की आग ऊपर के पहाड़ों में निचले पहाड़ों की अपेक्षा तेजी से फैलती है।
2.दस लाख प्रजातियों के वर्ग वर्तमान में पृथ्वी पर निवास करते हैं।
3.बाँस वृक्षों के वर्ग में नहीं आता। यह घास की श्रेणी में आता है।
4.सबसे बड़ा मस्तिष्क चींटी का होता है।
5.बिल्ली को रात में 8-10 फीट दूर भी साफ दिखाई देता है।

नाम - नलिनी सिंह
विमल विद्या विहार, कक्षा - 7

महाप्रज्ञ स्कूल हमारा

महाप्रज्ञ स्कूल हमारा
हम बच्चों का देखो यह तो जान से भी प्यारा
हरियाली की गोद में इसकी शोभा न्यारी
हरी-भरी है यह धरती फूल से भी प्यारी
इसकी शोभा इसकी छवि को मिटने हम न देंगे
कड़ी मेहनत और सच्चाई से इसको हम सींचेंगे
हम बच्चों का नारा है यह हम बच्चों का प्यारा
आगे बढ़ता रहे सदा महाप्रज्ञ स्कूल हमारा
इस आंगन में पले बढ़े हम माँ का प्यार है पाया
उन्नति के पथ पर हमने देखो कदम बढ़ाया
बढ़ते हुए कदम ये देखो कभी न रुकने देंगे
अपने विद्या के आलय का ऊँचा नाम करेंगे
हम ऊँचा नाम करेंगे।

नाम - वैशाली जैन
महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर कक्षा - 8

कृती कर्मी

संस्थान के सेवाभावी कर्मी : श्री हुकमाराम जाट

प्रत्येक संस्था की विकास यात्रा की महत्वपूर्ण कड़ी उस संस्था के कर्मीगण होते हैं। समर्पित, सेवाभावी और सरलमना कर्मियों से संस्थान की नींव मजबूत होती है तथा विकास की यात्रा सुदीर्घकालीन होती है। जैन विश्व भारती ने भी अपने चार दशकों की विकास यात्रा ऐसे कर्मियों के सहयोग एवं समर्पण भाव से तय की है। इस संस्था में कार्यरत कर्मचारियों में एक सेवाभावी कर्मी हैं - श्री हुकमाराम जाट।

श्री हुकमाराम विगत 35 वर्षों से जैन विश्व भारती में अनन्य सेवा भावना से कार्य कर रहे हैं। समणीवृंद के निवास स्थान "गौतम ज्ञानशाला" में नियुक्त हुकमाराम पूरे परिसर में 'हुकमो जी' के नाम से जाने जाते हैं। कार्य के प्रति अपनी लगन, अटूट सेवा भावना, समय की पाबंदी और स्पष्टवादिता के गुणों से संपन्न इस कर्मी ने संस्था में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। पशु-पक्षियों के प्रति इनकी दया भावना उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय पक्षी मोर से इनको विशेष लगाव है। ग्रीष्मकाल में परिसर में जगह-जगह पानी के पात्र रखकर उनमें नियमित पानी डाल देते हैं ताकि पक्षी अपनी प्यास सहज ही बुझा सकें। परिसर में प्रतिदिन भ्रमण हेतु आने वाले लोगों को बड़े प्यार से पानी पिलाकर उन्हें आत्मानंद की प्राप्त होती है।

प्रशासन के शीर्षस्थ व्यक्तियों से लेकर एक सामान्य आदमी तक के प्रति इनका समभाव प्रशंसनीय है। अपनी सेवा-भावना से ये चारित्रात्माओं एवं समणीवृंद के बीच भी सदैव सराहना के पात्र बने रहते हैं। ऐसे सेवाभावी कर्मी को पाकर संस्था गौरव की अनुभूति करती है और उनकी सेवा भावना की अनुमोदना करती है।

वर्ष 1
अंक 2
अप्रैल-जून
2011

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका 'कामधेनु' के प्रवेशांक पर कई विशिष्ट व्यक्तियों एवं पाठकों की प्रतिक्रियाएं तथा संदेश प्राप्त हुए। सभी के प्रति हार्दिक आभार। पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रियाएं हमारी पत्रिका को और भी समृद्ध एवं प्रयोजनीयता प्रदान करने में प्रेरणा स्रोत का कार्य करेंगी। हमें अपने पाठकों से सदैव तटस्थ और समीक्षात्मक विचारों की प्रतीक्षा रहेगी।

I have received a copy of the inaugural issue (Jan-March 2011) of 'Kamdhenu'. The publication is very well mounted and informative.
As a matter of fact Jain Vishva Bharati should have planned such publication much earlier. However better late than never.
You may consider if appropriate to serialise highlights of each of our past Acharyas beginnings from Acharya Bhikshu in each quarterly issue for the knowledge and benefit of those readers devotees who may not be familiar with our Terapanth history.

Gobindlal Saraogi

त्रैमासिक 'कामधेनु' का प्रथम अंक मिला। बहुत सुन्दर बना है। मेरी हार्दिक बधाई।
एक अशुद्धि है। पृष्ठ 7 में अतीत के वातायन में न्यायाधीश राम विनोद पाल का उल्लेख है। दरअसल इनका नाम डॉ. राधा विनोद पाल था, ये द्वितीय महायुद्ध के अपराधियों की विश्वस्तरीय Trial के लिए नियुक्त अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय (at Hague) के न्यायाधीशों में एकमात्र भारतीय थे।

टोडरमल लालानी

जैन विश्व भारती द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में उठाया गया यह प्रथम कदम है। नामकरण काफी आकर्षक किया गया है। यह नाम जैन विश्व भारती के लिए गुरुदेवश्री तुलसी द्वारा संजोये गए सपनों का आकार है अतः आपके इस प्रयास में सम्भावनाओं की आहट का अहसास किया जा सकता है।
प्रथमदृष्टया सुन्दर साज-सज्जा, कथन को प्रस्तुत करने का सजग प्रयास, उपलब्ध सामग्री की प्रस्तुति को पाठकीय सम्मान प्राप्त होगा, ऐसी आशा की जानी चाहिए। सबसे बड़ी बात होगी कि जैन विश्व भारती के क्रियाकलापों से आज भी समाज उतना वाकिफ नहीं है, जितना होना चाहिए। आपका यह प्रकाशन उस गेप को भरने में योगभूत बनेगा।

पदमचंद पटावरी

'कामधेनु' का अंक प्राप्त हुआ। आकर्षक कलेवर में प्रस्तुत इस प्रकाशन के माध्यम से संस्था की उपयोगी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। पहला अंक एक सुंदर प्रयास है। प्रकाशित सामग्री में निरंतर उपयोगिता और सार्थकता बनी रहे इस पर ध्यान देते रहें।

राजकरन सिरोहिया

पाठक प्रतिक्रिया

'कामधेनु' ने प्रथमदृष्टया मन को मुग्ध किया। किसी भी संस्था की गृह पत्रिका की एक अनिवार्य शर्त यह होती है कि उसमें संस्था की गतिविधियों का सम्पूर्ण स्वरूप और झलक द्योतित हो। 'कामधेनु' का भाव पक्ष जितना ही मनोरम है, उसका कला पक्ष भी उतना ही आह्लादक है। इसमें प्रकाशित विषय की विविधता, प्रगति के पदचिह्न और प्रज्ञापुरुष आचार्य महाप्रज्ञ के शाश्वत मूल्यबोध से युक्त आलेख ने इस पत्रिका को अधिक मूल्यवत्ता प्रदान की है। मुद्रण और साज-सज्जा ने इसके कलेवर को चार चांद लगाया है।

जैन विश्व भारती परिवार को इस अत्युत्तम पत्रिका के प्रकाशन के लिए कोटिशः बधाई।

भंवरलाल सिंघी

जैन विश्व भारती की त्रैमासिक गृह पत्रिका 'कामधेनु' का प्रथम अंक मिला। जैन विश्व भारती संस्था अपने आप में गरिमायुक्त संस्था है। कामधेनु पत्रिका के सुन्दर स्वरूप ने उस गरिमा को और बढ़ाया है। इसके प्रथम अंक के द्वारा जैन विश्व भारती का संक्षिप्त परिचय मिला। आगामी अंकों में संस्था की ढेर सारी प्रवृत्तियों में से एक-एक प्रवृत्ति का विस्तार से अवलोकन करने का अवसर मिलेगा ऐसा विश्वास है। हमें उत्सुकता रहेगी आगामी अंकों की जिनके द्वारा हम जैन विश्व भारती से व्यापक रूप से परिचित हो सकेंगे।

शुभकरण नवलखा

'कामधेनु' जैन विश्व भारती की इन हाउस मेगजीन का प्रथम अंक हाथ में आते ही मन अतीत में चला गया और गुरुद्वय गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का वंदन नमन करने लगा। दोनों ही गुरुओं के स्वप्न एवं प्रेरणा का ही साकार रूप है जैन विश्व भारती।

'कामधेनु' उनके व्यक्तित्व को भी परिलक्षित करती है अर्थात् फरफेक्ट इनहाउस मैगजीन है।

कल्पना बैद

I express my joy and huge compliments for the superb & outstanding January-March 2011 issue of 'Kamdhenu'. Befitting to its name, reading this magazine will definitely prove to be the source of fulfilling all desires, quenching the thirst for knwoledge and enriching ourselves with spiritualism.

All the articles given therein have been beautifully chosen and reading them has helped a lot in filling up our minds with deep spiritual thoughts.

I have been higly impressed the way great strides have been made by Jain Vishva Bharati. I am impressed by your vision, leadership and exemplary dedication.

I particularly enjoyed reading 'Editorial' and especially the last couplet inspiring all readers to move ahead and not merely to read the past, but also decipher the future and create history by sincere and scrupulous efforts.

Wishing every success and assuring all my support.

Rajeev Chhajer